छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह –माघ–फाल्गुन, संवत् 2076
फरवरी 2020

ओ३म्

अंक 172, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

सत्यमेव जयते हुआ चरितार्थ

दस माह से चल रहे
संघर्षों को लगा विराम

वैध सूची को मिली मान्यता
पुलकित हुई आर्यजनता

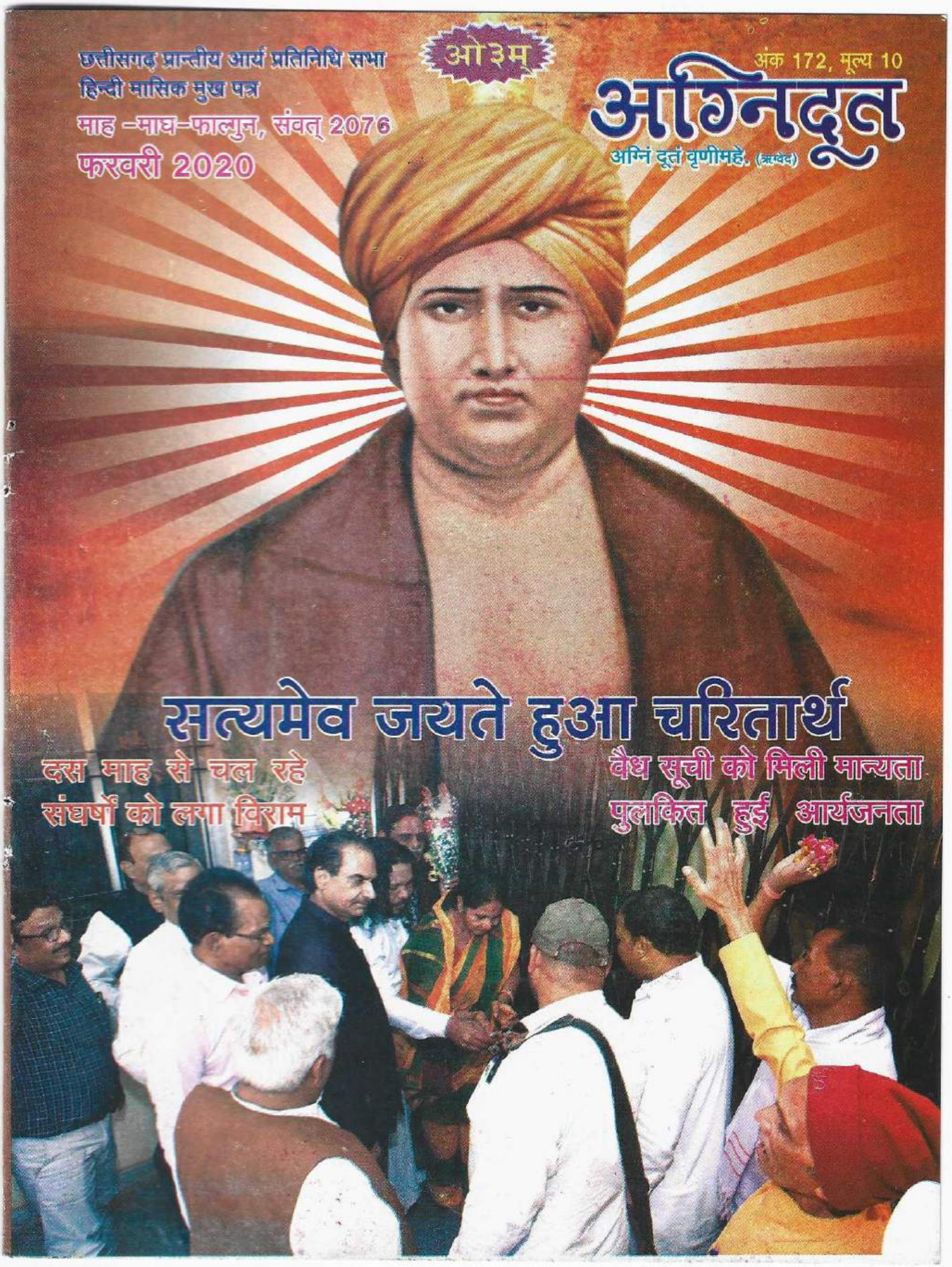

महर्षि दयानन्द आर्य उ. मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न वार्षिक क्रीड़ा उत्सव, आनन्द मेला एवं गणतन्त्र दिवस की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७६
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२०
दयानन्दाब्द - १९७

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 6260908636)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वर्ष - १५, अंक ७ — ओ३म् — मास/सन् - फरवरी २०२०

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	शुचि-यज्ञ में शुचि-हवि	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	हे बोधरात्रि ! हमें कब जगाएगी ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अपनी से अपनी बात	सम्पादक	०८
४.	परमात्मा की उपासना से आत्मा प्रकाशित होता है.	ओमप्रकाश आर्य	१०
५.	महर्षि जी ने धर्म के सच्चे स्वरूप को दर्शाया	खुशहालचन्द्र आर्य	११
६.	कोई भी देश अपनी नागरिकता के नियम बना सकता है.	सोमेन्द्र आर्य	१४
७.	सर्वश्रेष्ठ है मानव धर्म	गौरीशंकर वैश्य विनम्र	१७
८.	केन्द्रीय संस्कृत विवि स्थापित किया जाना जरुरी	संकलनकर्ता - आचार्य काशीनाथ चतुर्वेदी	१९
९.	ऋषि दयानन्द संसार के अद्वितीय महान युगपुरुष	मनमोहन कुमार आर्य	२१
१०.	मेरे मार्गदर्शक गुरु-स्वामी दिव्यानन्द	दीनानाथ वर्मा	२६
११.	माँ भारती का साहसी सपूत-वीरसावरकर	पं. ऋषिराज आर्य	२८
१२.	होमियोपैथी से पीलिया का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१३.	समाचार प्रवाह		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

शुचि-यज्ञ में शुचि-हवि

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां, शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः।
ऋतेन सत्यमृतसाप आयन्, शुचिजन्मानः शुचयः पावकाः॥

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता मरुतः। छन्दः त्रिष्टुप।

● **(मरुतः)** हे मनुष्यों ! **(शुचीनां वः)** तुम पवित्रों की **(हव्या)** हवियाँ **(शुची)** पवित्र (हो), **(शुचिभ्यः)** पवित्रों के लिए **(शुचिं)** पवित्र **(अध्वरं)** हिंसा-रहित यज्ञ को **(हिनोमि)** प्रेरित करता हूँ। **(ऋतसापः)** सत्य-प्रतिज्ञ लोग **(सत्यं)** सचमुच **(ऋतेन)** सत्य से **(आयन्)** व्यवहार करते हैं, **(शुचिजन्मानः)** पवित्र जीवन वाले **(शुचयः)** पवित्र जन **(पावकाः)** पवित्र करने वाले होते हैं।

भाइयों ! ईश्वर की वाणी सुनो ! ईश्वर सम्बोधित कर रहा है- "हे मनुष्यों ! तुम शुचि हो, पवित्रात्मा हो। तुम पवित्रों के लिए मैं पवित्र अध्वर की प्रेरणा करता हूँ। तुम पवित्रों की हवियाँ पवित्र होनी चाहिए।" मनुष्य का आत्मा स्वभाव से नीरंग निर्मल जल के समान पवित्र है। जैसे जल जिस भू-भाग या पात्र में जाता है, उसी के रुप-रंग और गुण-दोषों को ग्रहण कर तत्सम हो जाता है, वैसे ही मनुष्य का निर्मल आत्मा जिसके सम्पर्क में आता है, उसके गुण-दोष उसमें सक्रान्त हो जाते हैं, जिससे वह उसी के सदृश मलिन या पवित्र हो जाता है। वह आत्मा कर्म-संस्कारों के लेप से भी शुचि या मलिन होता है। परमात्मा का सन्देश है कि देह धारणकर आत्मा को शुचि ही रहना चाहिए। शुचि मनुष्यों के लिए परमात्मा शुचि अध्वर की प्रेरणा कर रहे है। अध्वर यज्ञ का नाम है, जो यौगिक अर्थ के अनुसार हिंसा-रहित ही होना चाहिए। जिससे लोक-हिंसा या लोक का अकल्याण हो वह कर्म यज्ञ नहीं है, प्रत्युत लोक के कल्याणार्थ किया जाने वाला कर्म ही यज्ञ है। मनुष्य का यह यज्ञ शुचि रहे, इसके लिए आवश्यक है कि इसमें पड़नेवाली हवियाँ भी शुचि हों। इसी शुचिता के सूत्र को पकड़कर मनुष्य को समस्त यज्ञों का अनुष्ठान करना है, चाहे वे दैनिक पंच यज्ञ हों, चाहे वाजपेय, राजसूय, पुरुषमेध, अश्वमेध आदि श्रौत यज्ञ हो, चाहे कोई अन्य लोक-हित के अनुष्ठान-रुप यज्ञ हों। मनुष्य के शुचि होने की एक निशानी यह है कि वह 'ऋतसाप' या सत्य-स्पर्शी हो जाता है, सत्य-प्रतिज्ञ बन जाता है। परिणामतः वह अपने व्यवहार में क्रियात्मक रुप से सत्य को अपना लेता है। सत्यमय शुचि जीवन व्यतीत करने वालों की शुचिता उन्हीं तक सीमित नहीं रहती, अपितु वह अन्यों को भी 'पावक' बना देती है। पवित्र जीवन अपने सम्पर्क में आने वालों को पवित्र करना ही है।

संस्कृतार्थ :- १. मरुतः मरणधर्माणो मनुष्याः (द भा), २. हि ग तौ वृद्धौ च। ३, ये ऋतेन सपन्ति प्रतिज्ञां कुर्वन्ति ते (द भा)। ४. अध्वर इति यज्ञनाम, ध्वरत्तिः हिंसा-कर्मा, तत्प्रतिषेधः (निरु. १.७)

सम्पादकीय

हे बोधरात्रि ! हमें कब जगाएगी ?

यह वही बोधरात्रि है जिसमें दयानन्द एक रात क्या जागा, फिर वह देश, धर्म व संस्कृति के लिए यावज्जीवन जागता ही रहा। इस जागरण का ही सबसे बड़ा परिणाम था, उसने आर्यसमाज जैसी एक युग परिवर्तनकारी संस्था का बीजारोपण देश के प्रसिद्ध महानगरी मुम्बई की धरती पर किया। यह संस्था जन कल्याण के कार्यों के कारण ही इतना प्रसिद्ध हैं। आरंभ में आर्यसमाज के नेताओं मे आर्य समाज के छठे नियम - ***संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य हैं*** *का खूब पालन किया और समाज को इस कसौटी ही पर खरा उतरवा दिया। महर्षि दयानन्द की अपनी इच्छा परमानन्द की प्राप्ति थी और इसके लिए वह मूलशंकर बालक घर से भाग निकला। मूलशंकर ने उस समय अनेकों कष्टों को बड़ी प्रसन्नता से झेला पर्वतों की कन्दराओं से लेकर भंयकर निर्जन वनों मे विहार करने के पश्चात मूलशंकर को मथुरा में पहुँचकर ही सच्चे गुरु के दर्शन हुए। संन्यास ले लेने पर वे मूलशंकर से स्वामी दयानन्द सरस्वती हो गए।*

अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को लिखकर स्वामी दयानन्द लोगों की कड़ी आलोचना के शिकार बन गये, परंतु शीघ्र ही उन द्वारा लिखित तत्कालिन वायसराय ने सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजीअनुवाद करवा कर इसका अध्ययन किया और भविष्यवाणी की थी कि यदि इस ग्रन्थ का प्रचार होता रहा तो अंग्रेजो को सौ वर्षों के भीतर-भीतर इस देश भारत को छोड़ देना पड़ेगा। यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और इस ग्रन्थ के छपने के सौ वर्षों से पहले ही हमारा देश स्वतंत्रता प्राप्त कर गया इस विषय में यह बताना आवश्यक है कि स्वतंत्रता-सेनानियों में लगभग 80 % व्यक्ति आर्य समाजी ही थे।

जब ब्रिटिश सरकार ने भारत में वैदिक राष्ट्रगीत नामक पुस्तक जब्त कर ली तो स्वर्गीय दामोदर सातवेलकर जी ने सरकार को चेतावनी दी कि मेरी समझ में नहीं आया कि वेद की एक छोटी सी पुस्तक के लिए अंग्रेजों को भारत मे टिका रहना असम्भव हो जाएगा। भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री मूलचन्द जान एडवोकेट का कहना था-कि जिस गांव में हमें एक भी आर्य समाजी मिल जाता था, वहां हमारा स्वतंत्रता का नारा कभी दब नहीं पाता था, और ऐसा लगता था कि मानो दयानन्द स्वामी ने हमारे आने से पूर्व ही हमारे कार्य की पृष्टभूमि वहां

बना रखी है। प्रसिद्ध स्वतंत्रता-सेनानी वीर भगतसिंह, श्री चन्द्रशेखर, रामप्रसाद विस्मिल आदि हुतात्मा आर्य समाज की ही उपज थे। शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय भी जो स्वतंत्रता -सेनानियों के अग्रणी थे, आर्य समाज को ही अपनी धर्म की माता मानते थे और महर्षि दयानन्द को धर्मगुरू मानते थे।

विधवा-विवाह अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि सामाजिक हित की नई नीतियाँ लागू करके स्वामी दयानन्द ने भारत के जनजन में नवचेतना भर दी। इस प्रकार समस्त समाज में नवजागरण को फूंककर उन्होने जो स्थान पाया, वह दयानन्द को जाति-उद्धारक, युगप्रर्वतक बनाने में पूर्णतया पर्याप्त है। स्वयं गुजराती होने पर भी हिन्दी का प्रचार -प्रसार करना उनके राष्ट्रवादी होने का प्रबल प्रमाण है। आने वाली पीढ़ियाँ शायद ही यह मान पाएंगी कि एक लंगोटधारी दयानन्द अकेले होने पर भी देश में एवं संसार में इतना जल्दी परिवर्तन लाने में कैसे सफल रहे यदि आज की तुलना में आपके सामने सौ वर्ष पहले वाला चित्र आ सके तो आप आसानी से अन्दाजा लगा पाएंगे कि पिछले सौ वर्षो में यदि महर्षि दयानन्द द्वारा सामाजिक हित में प्रचार-कार्य न हो पाता, तो शायद आज भी हम पिछड़ें हुए ही होते।

आज कहीं-कहीं आर्य समाजों में केवल धार्मिक परिपाटी को ही चलाते जाना काफी समझा जाता है। सामाजिक जागृति, देश और विश्वकल्याण को लक्ष्य मानकर सामाजिक सुधार का कार्य करने वाले आर्य समाज वास्तव में ही कम होते जा रहे हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे आर्यसमाज भी एक रूढ़िवादियों का टोला बनता जा रहा है। इस विडम्बना के विरुद्ध चुनौती देनी होगी, अन्यथा वे लोग जिनके दिल में दयानन्द और आर्य समाज के प्रति श्रद्धा है वे लोग शीघ्र ही निष्क्रिय हो जाऐगे। कुछ लोग यह भी भूल जाते है कि आर्य समाज एक सम्प्रदाय नहीं आन्दोलन है और आन्दोलन वही कहला सकता है जो किसी न किसी रूप में गतिमान् रहे। यह बात सत्य है कि आर्यसमाज की काफी मान्यताओं को प्रशासन ने स्वयं अपना लिया है। लेकिन फिर भी आर्यसमाज की कई ऐसी मान्यताएं और कार्यक्रम शेष है जिनकी ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अतः विश्व-उत्थान के लिए धार्मिक कुरीतियों, नरबलि, पशुबलि, रंगभेद आदि को दूर करने का विशाल कार्यक्षेत्र है। अपने ही देश में विधर्मियों द्वारा फैलाई हुई अराष्ट्रीयता को दूर करना क्या कम है ? आज भारत के चारों ओर सीमाओं के आस पास विधर्मी अड्डे पनप रहे हैं इन्हें केवल आर्यसमाज ही गिरा सकता है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भारत में कानूनी रूप से इन पर अंकुश लगाना आसान नहीं है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने ज्वालापुर गुरूकुल में भाषण देते हुए यह चेतावनी दी थी कि **भविष्य में वे सब धर्म नष्ट हो जावेगें जो तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरेंगे और केवल वहीं धर्म बचा रह सकता है जिसमें युगधर्म बनने की क्षमता है।** अब प्रश्न होता है कि कि कौन सा धर्म युग धर्म बन सकता है। उत्तर स्पष्ट है कि वैदिक धर्म ही युगधर्म बन सकता है, जो कि सदैव ही तर्क की कसौटी पर खरा उतरा है। यह वही धर्म है जिसका पुनरूद्धार कर स्वामी दयानन्द ने समयानुसार मान्यताओं को बदलने का साहस दिया था। जिसका बीड़ा आर्यसमाज ने उठाया है। अब आवश्यकता है महर्षि दयानन्द के कार्यो को गति देने की। अतः

वर्तमान आर्यसमाज आन्दोलन के रूप में सभाओं द्वारा संगठित होती हुई तैयार हो। कोई भी आर्य समाज किसी एक सभा से विलग न हो। प्रत्येक आर्य समाज पर किसी न किसी सभा का अंकुश हो ताकि अवांछनीय एवं अवसर वादी लोग केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रभु बनकर बैठे न रहें। इसलिए हर समाज को किसी सभा से संयुक्त होना आवश्यक हैं समाज की प्रत्येक सम्पत्ति सभा के नाम पर हो और प्रत्येक आर्य समाज में प्रतिदिन वेद मंत्रों का गायन हो। कई मंचों से अन्य धर्मों का खुल्लम-खुल्ला प्रचार हो रहा है। इस ओर सभाओं को विशेष ध्यान देने की जरुरत है जिससे संसार के कोने कोने में आर्यधर्म का संदेश भी पहूंच सके और **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का नाद विश्व में गूंज सके। शिवरात्रि का पर्व आगामी फा. कृ. त्रयोदशी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाने वाला है, इस दिन का आर्य समाज में विशेष महत्व है सारा देश इसे शिवरात्रि के रूप में मनाता है किन्तु आर्य समाज इसे बोध रात्रि के रूप में मनाता है, क्योकिंयह वही शिवरात्रि है जिसने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बनने की प्रेरणा दी।

साधारण रोगियो, वृद्धों, शवों, मुर्दो को ले जाते हुए रथियों और सन्यासियों को सहस्त्रों जन प्रतिदिन देखते हैं। किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को वह बोध प्रदान किया जिसका प्रभाव संसार के आधे मनुष्यों पर अब तक विद्यमान है। इन्हीं दृश्यों से उद्भूत बुद्ध की दया ने करोड़ों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करूणा और सहानुभूति का स्त्रोत बहाया था। वृक्षो से फल को जमीन पर गिरते हुए प्रतिदिन लाखों लोग देखते हैं किन्तु न्यूटन की दिव्य दृष्टि ने वृक्ष से गिरते सेब के फल को देखकर संसार में गुरूत्वाकर्षण का वैज्ञानिक सिद्धान्त दिया। भोजन बनते समय हंडी के ऊपर रखे ढक्कन को भाप के दबाव हिलते हुए लाखो लोगों ने माताओं ने अपने रसोई में देखा होगा और देख भी रहें हैं। किन्तु जेम्सवाट की नजरों ने जब दृश्य देखा तो वाष्प इंजन की परिकल्पना साकार हो उठी। इसी प्रकार अनंत काल से शिवभक्त भी शिवलिंग पर पूजा के दौरान चढ़ाए मिष्ठानों पर उछलकूद मचाते हुए चूहों को भी हजारों बार देखा होगा किन्तु कभी किसी के मन में कभी कोई बात नहीं उठी किन्तु वही दृश्य जब गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक छोटे से गांव में निवास कर रहे औदिच्य ब्राह्मण कर्षणजी का महज १४ वर्ष का किशोर मूलशंकर जिसने शिवरात्रि की रात को भूखा रहकर आँखों में पानी के छिंटे दे देकर जागते हुए व्रत को इसलिए रखा कि उसे इस रात प्रलयंकर कैलाशवासी शिव के दिव्य दर्शन प्राप्त होगा किन्तु यह क्या ? बालमन में शिवलिंग पर चूहों के उत्पात से बेखबर शिव को देखकर नकली शिव का चिन्तन दृढ़कर असली की खोज में घर परिवार का त्याग कर नदी पहाड़ पर्वत ग्राम नगर शहर जंगल सब छान डाला।

अन्त में सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त कर संसार के इतिहास में जो योगदान प्रस्तुत किया वह स्वर्णाक्षरों में अंकनीय है, आइये इस बोध पर्व पर हम भी अपना कर्त्तव्य बोध प्राप्त कर ऋषिमिशन को आगे बढ़ा अपने जीवन को कृतार्थ करें। जागते रहें, आसपास वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध तो कोई गतिविधि नहीं हो रही है यदि दिखी तो झट उसके निराकरण के लिए हर सम्भव प्रयास कर सकें तो ही सच्चे ऋषि भक्त कहलाएँगे, अन्यथा नाम की रोटी खाने वालों की कमी नहीं है।

- आचार्य कर्मवीर

अपनों से अपनी बात

(छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वैधानिक मामला)

- आचार्य कर्मवीर, सम्पादक

सहृदय आर्यों !

एक गम्भीर विषय पर अपनी लेखनी चलाने से पूर्व आप सभी साथियों के बीच यह स्पष्ट कर दूँ कि मैं महर्षि दयानन्द का एक अदना सा सिपाही हूँ आर्यसमाज से हार्दिक अनुराग है। सभा समितियों के मध्य वैचारिक मतभेदों को मनभेदों में बदलते हुए देखकर मन व्यथित हो जाता है उसी पीड़ा को जो पिछले दिनों अपने लोगों के बीच झेला अभिव्यक्त करने का विनम्र प्रयास कर रहा हूँ। किसी व्यक्ति विशेष को ठेस पहुंचाने का उद्देश्य कहीं नहीं है।

देश की प्रख्यात नगरी मुम्बई में सन् १८७५ को भारतीय नवजागरण के प्रबल पुरोधा महर्षि दयानन्द जी महाराज ने खोए हुए पूर्व गौरव तथा विलुप्त वैदिक संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठापित कर अज्ञान, अन्याय और शोषण के खिलाफ स्वर्णिम भारत की परिकल्पना को साकार करने आर्यसमाज की नींव रखी थी। अपने जन्म काल से ही आर्य समाज अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अनेक ऐतिहासिक आन्दोलनों का संचालन कर देश को साक्षर सशक्त व समृद्ध बनाने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील होता रहा है। कार्य योजना को विस्तार देने जनकल्याणकारी गतिविधियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिये देश की राजधानी में एक शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रान्त स्तर पर एक-एक प्रान्तीय सभाएँ समयानुसार गठित कर संचालित होती आ रही है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज की राज्य स्तरीय इकाई का नाम है। राज्य गठन के साथ ही समाज के जागरुक कर्णधारों ने विधिवत इसका गठन कर निरन्तर इसकी चल-अचल सम्पत्ति की सुरक्षा व अभिवृद्धि का संकल्प लेकर सतत् निष्काम भाव से महर्षि के मन्तव्यों को जनव्यापी बनाने वैदिक सिद्धान्तों को प्रान्त के कोने-कोने तक प्रचार-प्रसार दौरे एवं साहित्य प्रकाशन, आर्यवीर दल चरित्र निर्माण व प्रशिक्षण शिविर आदि विविध माध्यमों से निरन्तर प्रयास जारी रखा हुआ है। वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व गुरुकुल के योग्य स्नातक संघर्षशील वैदिक मिशनरी आचार्य अंशुदेव आर्य के कंधों उनकी मजबूत टीम पर है, आचार्य अंशुदेव जी का पिछला एवं वर्तमान कार्यकाल उपलब्धियों के इतिहास से भरा है। जहां तक संपत्ति संरक्षण एवं अभिवर्धन का सवाल है उस दिशा में विगत कार्यकालों से श्रेष्ठ प्रदर्शन कहा जा सकता है। न्यायालयीन विवादों एवं प्रतिनिधि सभा का चोली दामन का संबंध रहा है, पुनरपि वर्तमान कार्यकाल में अधिकांश विवादों का निपटारा कर एक सुखद एवं संतुलित वातावरण को बनाने की पहल में काफी हदतक कामयाबी हासिल हुई है। इस दिशा में और भी प्रबल प्रयास अपेक्षित है जो कि सामूहिक एवं सांगठनिक सहयोग से ही सम्भव है।

जब-जब भी दो पक्षों के बीच उद्देश्य व लक्ष्य की दिशाहीनता को लेकर संघर्ष की परिस्थिति निर्मित होती है तभी कुरुक्षेत्र का मैदान सज जाता है। अपने हथियारों के साथ योद्धा सजग हो जाते हैं। कहीं इन्सानों का खून बहता है, कहीं इंसानियत शर्मसार होती है, कहीं रिश्ते संबंधों की मिठास कड़वाहट में बदलते देर नहीं लगती, कहीं सपनों व अरमानों की होली धू-धू

कर जलने लगती है। समस्या तब अधिक भयावह और गंभीर हो जाती है, जब यह संघर्ष एक सार्वजनिक व सर्वहितकारी उद्देश्य का गला घोंटकर सर्वथा संकुचित होते हुए वैयक्तिक स्तर पर आकर अटक जाती है। जब अपने के बोल कड़वे घोल में तब्दील होने लग जाते हैं फिर आर्यों के साप्ताहिक सत्संग के दौरान बोली जाने वाली पंक्ति **"प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो"** बीते युग की बात लगने लगती है, विगत दिनों छत्तीसगढ़ के आदरणीय आर्यों के बीच फूटी अन्तर्कलह की दुर्गन्ध न्यायार्य सभा वाले विकल्प को तिलांजलि देकर प्रशासन को कूदने के लिए बाध्य करना क्या हमारा व्यवहार आर्योचित कहलाने लायक था? कई बार सावधानियों के बावजूद भी सभा समितियों में जाने अनजाने में विसंगतियों एवं विकृतियों की सम्भावना से साफ इन्कार नहीं किया जा सकता। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि उसका कोई स्वस्थ एवं संतुलित समाधान है ही नहीं। **"वादे-वादे जायते तत्वबोधः"** यह दर्शनशास्त्र का प्रचलित सिद्धान्त है, मिल बैठकर बड़े-बड़े कल्याणकारी फैसले लिए जा सकते हैं, तो वैचारिक वैमनस्य कौन सा बड़ा संकट है ? जिसे छत्तीसगढ़ की प्रबुद्ध आर्यजनता दूर नहीं कर सकती। मेरा मानना है मेरे प्रहार एवं तेरे प्रहार दोनों से ही सिर्फ आर्यत्व लहूलूहान होता है।

प्रभु करे यह समझ हम आर्यों में पैदा हो जाये। आज यही समय की मांग है कि जिस कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की ध्वजा को लेकर अग्निकुण्ड में समाज के लिए सर्वस्व का स्वाहाकार कर हम आगे आए थे, हमारे वे कदम लक्ष्य से पहले क्यों डगमगाने लग गए ? जगद्गुरु के गौरवाष्पद पद में भारतवर्ष को आसीन करने वाला हमारा ध्येय क्यों ठहर सा जा रहा है ? आइए गिल शिकवे भूलाकर अपनी गलतियों को सुधारकर फिर से अपने हृदय में देव दयानन्द की संकल्पाग्नि को प्रज्वलित करें पूरा विश्व बाट ज़ोह रहा है आर्यों अपना शौर्य तो जगाओ। जेल के अन्दर कैदियों के मन में देशभक्ति की भावना भरने वाले अमर क्रान्तिकारी कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर ने कभी आर्यसमाज की तत्कालीन दुर्दशा को, रो कर गाया था- वे ही पंक्तियाँ आज मेरी लेखनी से मचल जा रही है।

बनो आर्य खुद और, जहां को बना दो।
जो कहते हो दुनियां को करके दिखा दो।
प्रभु एक है, वेद है उसकी वाणी ।
ये पैगाम ऋषियों का, घर-घर सुना दो।
न तहजीब मिट पाए, ऋषियों का वीरों !
मिटाना जो चाहे, उसे तुम मिटा दो।
हंसाओं न दुनिया को, आपस में लड़कर।
सकल विश्व में प्रेम गंगा बहा दो ॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं
वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
संजनाना उपासते ॥
प्रेम से मिलकर चलो
बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम
कर्त्तव्य के मानी बनो ॥
(ऋग्वेद)

(आध्यात्मिक) परमात्मा की उपासना से आत्मा प्रकाशित होता है।

- ओमप्रकाश आर्य

प्रकाशस्वरुप परमात्मा ही उपास्य हैं अन्य कोई नहीं। उसकी उपासना से आत्मा उसी प्रकार प्रकाशित होता है जिस प्रकार यज्ञाग्नि में घी और समिधा से अग्नि प्रदीप्त होती है और विद्युत से रात में घर प्रकाशित होता है। यजुर्वेद कहता है - **एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेह॥ ३८/२५**

पदार्थ - हे परमेश्वर ! जो आप हमारे आत्माओं में **(एधः)** प्रकाश करने वाले ईंधन के तुल्य प्रकाशक **(असि)** हैं, (समित) सम्यक् प्रदीप्त समिधा के समान **(असि)** हैं, **(तेजः)** प्रकाशमय बिजली के तुल्य सब विद्याओं को दिखाने वले **(असि)** है, सो आप **(मयि)** मुझ में **(तेजः)** तेज को **(धेहि)** धारण कीजिए। आपको प्राप्त होकर हम लोग **(एधिषीमहि)** सब ओर से बुद्धि को प्राप्त होवें।

भावार्थ : हे मनुष्यों ! जैसे ईंधन से और घी से अग्नि की ज्वाला बढ़ती है वैसे उपासना किए जगदीश्वर से योगियों के आत्मा प्रकाशित होते हैं। परमात्मा की प्राप्ति बाह्यजगत् में नहीं हो सकती। उसे अपने अन्दर ही प्राप्त किया जा सकता है जिसका केन्द्रस्थान हृदय है। हृदय में बैठा (आत्मा जब परमात्मा की उपासना करता है तब वह प्रकाशस्वरुप परमात्मा उसको अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। जिस प्रकार घी और ईंधन से अग्नि की ज्वाला प्रदीप्त हो उठती है, विद्युत-दीप से रात में घर उजाला से भर जाता है उसी प्रकार साधक की सत्यमन से की कई उपासना से सच्चे साधक का आत्मा परमात्मा से प्रकाशित हो जाता है। उपासना विधि ही परमात्मा की अनुभूति की सत्यविधि है। इसके विपरीत अन्य विधि परमात्मा के नाम पर धोखा है, दिखावा है, मिथ्या है, असत्य है, प्रवंचना है, छलावा है, अज्ञानता है। इसी कारण इतने मंदिर-मस्जिद आदि होते हुए भी मनुष्यों के हृदय में कोई परिवर्तन नहीं है। सारा जीवन घंटा-घड़ियाल बजाता हुआ जहां का तहां ही रहता है क्योंकि वेद कह कुछ रहा है और वह कर कुछ और रहा है। मनुष्य क्या करता है ? मंदिर में जाता है, मूर्ति के सामने माथा टेकता है, उसकी परिक्रमा करता है, धूप-दीप-नैवेद्य से पूजा-अर्जना करता है ! फूल-माला चढ़ाता है। पुआ-पकवान-फल अर्पित करता है। भला इन सब क्रियाओं से परमात्मा की उपासना कहाँ हुई ? इनमें एक भी क्रिया ऐसी नहीं है जो उपासना के अन्तर्गत आती है। इसी कारण आजीवन में सब क्रियाएँ करने के बाद भी मनुष्य को परमात्मा की अनुभूति नहीं होती।

भगवान् के भक्तों की कमी नहीं है पर जैसा वेद भगवान् का आदेश है वैसा वे नहीं करते हैं। उपासना के स्थान पर वे बाह्याडम्बर करते है। यही कारण है कि धार्मिक स्थलों पर भी अनेक दुष्कृत्य होते देखे जाते हैं। परमात्मा की अनुभूति का मार्ग है - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इसी पथ पर चलते हुए साधक परमात्मा की उपासना करता है और अपनी आत्मा को परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित करता है। यदि अपने अन्दर निहित आत्मा को अग्नि मान लिया जाए और परमात्मा की उपासना को समिधा और घी तो जितना ही आत्मा रुपी अग्नि में उपासना रुपी समिधा और घी डाला जाएगा उतनी ही आत्मा रुपी अग्नि प्रदीप्त होगी। वह उतना ही चमकता हुआ चला जाएगा। परमात्मा को बाहर की दुनिया में नहीं खोजा जा सकता। उसकी प्राप्ति का स्थान हृदय रुपी मंदिर है। यही आत्मा का निवास स्थान है। यहीं वह परमात्मा की ज्योति से ज्योतिमान हो सकता है। छन्दोग्य उपनिषद् ८/१ में यही बात कही गई है - इस शरीर रुपी ब्रह्मनगरी में छोटा सा कमल के समान हृदय रुपी मंदिर है। इस छोटे से हृदय-मंदिर में छोटा-सा हृदयाकाश है। उस आकाश के भीतर जो छिपा है उसे खोजना चाहिए, उसे जानना चाहिए।

अतः यह निश्चित हो गया कि परमात्मा को खोजने के लिए हमें बाहर नहीं जाना है। उसे योग-साधना के माध्यम से अपने अन्दर ही खोज जा सकता है। उपासना रुपी ईंधन और घी से यहीं पर अपने आत्मा को प्रकाशित किया जा सकता है।

पता - आर्यसमाज रावतभाठा(राजस्थान)

वैचारिक

"महर्षि जी ने धर्म के सच्चे स्वरुप को दर्शाया"

- खुशहालचन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द के आने से पहले धर्म को एक मामूली सी चीज समझते थे। मिट्टी के एक खिलौने के समान समझते थे, जो छोटी सी भूल से ही टूट जाता था। जैसे यदि कोई अपने व्यापार के लिए विदेश चला गया, तो धर्म के ठेकेदार उसे धर्म से निकाल देते थे। कोई दूसरे के हाथ से रोटी खाली तो वह भी धर्मच्युत हो जाता था। लोग माथे पर टीका खड़ा करें या पड़ा करें इसी को धर्म समझते थे। सिर पर चोटी गले में जनेऊ डालने मात्र को ही धर्म समझ लेते थे। राम नाम की चद्दर ओढ़ लेने मात्र से ही धर्म समझ लेते थे। मन्दिर जाकर किसी देवी-देवता के दर्शन मात्र कर लेने को ही धर्म समझते थे। बाकी दिन वह कुछ भी करे उसको छूट मिल जाती थी। हिन्दू जाति अनेक मत-मतान्तरों में बंटी हुई थी। कोई राम को, कोई कृष्ण का, कोई हनुमान जी का, कोई महादेव का, कोई गणेश जी का तो कोई दुर्गा, काली तथा लक्ष्मी का उपासक था, तो कोई अन्य देवी-देवताओं का उपासक था। वे अपनी देवी या देवता की मूर्ति सामने रखकर उसको अगरबत्ती दिखाकर आरती उतार लेने से ही धर्म का पालन हो गया समझते थे। स्त्रियां उपवास रख लेना या किसी देवी-देवता की कथा सुन लेने मात्र को ही धर्म पालन के लिए पर्याप्त प्रयास कर लेना समझती थी। सही धर्म का बहुत कम लोगों को ज्ञान था। कुछ लोग ही धर्म के बारे में जानते थे। वे अपने तक ही सीमित रखते थे। किसी को बतलाने की आवश्यकता नहीं समझते थे। इस प्रकार धर्म कुछ लोगों की बपौती बन गई थी।

अब प्रश्न उठता है कि धर्म क्या है ? धर्म उन गुणों का नाम है जिनको धारण करने से यानि जीवन में उतार लेने से अपना जीवन तो उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होवे साथ ही अन्य लोगों को भी प्रेरणा देकर उनका

जीवन भी सुखी व शान्तिमय बनावे और मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त करें, इस जीवन पद्धति को धर्म कहते हैं। सही मार्ग पर चलना ही धर्म होता है। धर्मग्रन्थ वह होता है जिसमें यह लिखा हो कि क्या काम करने से तुम सुखी बनोगे और क्या काम करने से दुःखी बनोगे। क्या काम करना चाहिए और क्या काम नहीं करना चाहिए। ऐसा धर्मग्रन्थ केवल वेद ही है, जिनको महर्षि देव दयानन्द ने अपने सच्चे गुरु स्वामी विरजाननन्द की गोद में करीब तीन वर्ष तक बैठकर वेद सम्बन्धी सभी आर्ष ग्रन्थों को पढ़ा और जान लिया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों के हास्य से ही विश्व की यह दयनीय स्थिति हुई है और इसी के प्रचार व प्रसार से ही विश्व पुनः उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकता है। यह जानकर साथ ही अपने गुरु को दिये वचनों को पूरा करने के लिए महर्षि ने अपना पूरा जीवन वेद प्रचार परोपकार, मानव उत्थान व प्रचलित कुप्रथाएँ, अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाने के लिए लगा दिया। महर्षि ने अपने जीवन में क्या-क्या काम किये उनका संक्षिप्त परिचय।

(१) वेद ईश्वरीय ज्ञान है :- महर्षि दयानन्द के आने से पहले वेद ऋषि-मुनियों के बनाए हुए मानते थे। परन्तु महर्षि ने गुरु विरजानन्द की गोद में करीब तीन साह बैठकर व्याकरणाचार्य बनकर वेदों के मन्त्रों का सही अनुवाद करना सीख लिया और वेदों के मन्त्रों के आधार पर यह जान लिया कि वेद ऋषि-मुनियों ने नहीं बनाये हैं बल्कि ईश्वर की वाणी है। कई वेद मन्त्रों में ऋषियों का नाम लिखा हुआ है, जिससे यह भ्रम बनता है कि वेद ऋषियों के बनाए हुए हैं परन्तु सही बात है कि जिस मन्त्र में किसी ऋषि का नाम है वह मन्त्र का कर्त्ता नहीं लेकिन दृष्टता है इसलिए उस ऋषि का नाम लिखा है। यह भ्रम महर्षि ने दूर किया

और वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताया। वेद सम्बन्धी महर्षि की मान्यता है कि ईश्वर ने प्रकृति के परमाणुओं से पूरी सृष्टि की रचना करके यानि पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे व नदी-पहाड़ आदि सब बनाकर अन्त में मनुष्यों की उत्पत्ति हिमालय के पठार पर युवा स्त्री-पुरुषों के रुप में की ताकि सृष्टि आगे भी चलती रहे। मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर ने चार ऋषियों जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद क्रमशः उच्चारित करवाये। ईश्वर ने वेदों में शिक्षा के रुप में यह बतलाया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए, उनको मनुष्य अपने जीवन में धारण कर लेवें तो वह अपना जीवन भी सुखी व आनन्दमय बना सकता है। साथ ही दूसरों का भी बना सकता है और मृत्यु के बाद मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। यदि मनुष्य उत्पत्ति के बाद ईश्वर वेद-ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत् ही रह जाता। इसीलिए मानव को सही रुप में मानव बनाने के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया और इसीलिए महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताया।

(२) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है :- महर्षि दयानन्द का मानना है कि वेदों में सब सत्य विद्याएँ हैं। पहले के वेद भाष्यकार वेदों को केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे और वेदों को अनादि न मानकर उनमें इतिहास और हिंसा का वर्णन है, ऐसा मानते थे, परन्तु महर्षि ने बताया कि वेद ज्ञान सम्पूर्ण मानव-मात्र के लिए उनके पूरे जीवन को सुचारू रुप से चलने के लिए ईश्वर ने बनाए हैं तो मनुष्य को सब विद्याओं को जानने के बाद ही अपने जीवन को उत्तम व श्रेष्ठ बना सकता है और मोक्ष प्राप्ति के लिए अग्रसर हो सकता है। इसलिए ईश्वर ने वेदों में सब सत्य विद्याओं का वर्णन किया है तभी मनुष्य उनको पढ़कर और उनके अनुसार चलकर अपने व दूसरों के जीवन को उन्नत कर सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

(३) वेदों में मानव के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है उतना पूर्ण ज्ञान है :- कई विद्वान कह देते हैं कि वेदों में ईश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान है। यह कहना उनका गलत है कारण ईश्वर ने वेद मनुष्यों के लिए ही बनाये हैं कारण मनुष्य ही भोग व कर्म योनि है, वही अपने किये कर्मों के अनुसार मोत्र को प्राप्त करता है इसलिए वेद केवल मनुष्यों के लिए ही है। पशु-पक्षी तथा अन्य जीव तो केवल भोग योनि है, वह तो अपने पूरे जीवन में भोग करके दूसरी किसी भी योनि में जाता है, वह अपनी योनि से सीधा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए उसको वेद ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं। वेद ज्ञान केवल मानन-मात्र के लिए है। मानव जिन-जिन कर्मों को करने से मोक्ष प्राप्त कर सकता है, वही कर्म करने का उल्लेख वेदों में है। इससे अधिक ज्ञान वेदों में देने के लिए ईश्वर को आवश्यकता भी नहीं। ईश्वर के पास तो अनन्त ज्ञान है जिससे वह पूरी सृष्टि चलाता है। परन्तु वेदों में उतना ही ज्ञान दिया है जितना मनुष्य को आवश्यक है। जैसे कोई शिक्षक एम.ए. या बी.ए. पास है, उसके पास तो एम.ए. व बी.ए. का ज्ञान है। यदि वह शिक्षक दसवीं क्लास को पढ़ाता है तो वह विद्यार्थियों को दसवीं क्लास की पुस्तकों का ज्ञान ही करवावेगा। इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की आवश्यकता का ज्ञान ही वेदों में दिया है। इसलिए वेद ज्ञान मनुष्यों के लिए पूर्ण है न कि ईश्वर के लिए।

(४) वेद ज्ञान मनुष्यों के लिए संविधान है :- जिस प्रकार किसी राष्ट्र का कोई एक संविधान होता है, उसी के अनुसार चलने से राष्ट्र उन्नत व समृद्धशाली बनता है, इसी प्रकार ईश्वर ने वेद ज्ञान मनुष्यों को संविधान के रुप में दिया, जिनको पढ़कर और उनको जीवन में उतार कर मनुष्य उन्नति करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसी को पाने के लिए जीव को ईश्वर धरती पर भेजता है।

(५) वेदानुसार चलने से ही विश्व का कल्याण है :- जब तक विश्व में वेदों का पठन-पाठन था, तब तक विश्व में परस्पर प्रेम था और सब लोग आनन्द व सुख से जीवनयापन कर रहे थे। महाभारत से करीब एक हजार वर्ष पहले वेदों का पठन-पाठन प्रायः लुप्त हो गया तभी से विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया कारण महाभारत के युद्ध में अधिकतर बलवान, बुद्धिमान, विद्वान्, आचार्य व योद्धा मारे गये जिससे स्वार्थी और कम पढ़े लिखे ब्राह्मणों व पण्डितों का आधिपत्य हो गया। उन्होंने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए अनेकों मत-

मतान्तर चला दिये, जिससे विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड इतना बढ़ गया जिससे विश्व दिशाहीन हो गया। ईश्वर की असीम कृपा से सन् १८२५ में देव दयानन्द का टंकारा (गुजरात) में प्रादुर्भाव हुआ। उसको १४ वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन एक घटना से सद्ज्ञान हुआ और वह केवल २२ वर्ष कीआयु में ही घर छोड़कर सच्चे शिव की खोज में चल पड़ा और करीब तीन साल तक अपने सद्गुरु स्वामी विरजानन्द के पास रहकर वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का पूरा अध्ययन करके देश के चारों कोणों में घूम-घूम कर अनेकों दुःख, कष्ट व अभावों को सहकर जीवन भर पूरी लगन के साथ वेदों का प्रचार किया जिससे वेदों की कुछ अंश में पुनः स्थापना हुई, जिससे देश की उन्नति व समृद्धि पुनः प्रारम्भ हुई।

(६) वेदों में अन्धविश्वास नहीं :- वेदों में जादू टोना, गण्डा-डोरी, सगुन-अपसगुन, फलित ज्योतिष आदि नहीं है। परन्तु इनके मानने के कारण ही देश में अन्धविश्वास व पाखण्ड अधिक बढ़े। दूसरा इनके बढ़ने का कारण मूर्त्तिपूजा और अवतारवाद है। महर्षि दयानन्द ने इस सबका डटकर विरोध किया। अवतारवाद के बारे में लोगों की मान्यता है कि जब धरती पर अन्याय बढ़ जाता है तब अन्याय को नष्ट करने के लिए ईश्वर किसी न किसी रुप में अवतार लेते हैं। जैसे रावण जैसे अन्यायी को मानरने के लिए ईश्वर ने राम का अवतार लिया और कंस जैसे अन्यायी को मारने के लिए कृष्ण के रुप में ईश्वर ने अवतार लिया। महर्षि ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापी, निराकार, अजर व अमर है। अवतार लेने से ईश्वर को सर्वव्यापी न होकर एक स्थानव्यापी होना पड़ेगा। निराकार न रहकर साकार होना पड़ेगा और मनुष्य शरीर धारण करने के बाद बूढ़ा भी होगा और मृत्यु को भी प्राप्त होगा, इसलिए ईश्वर के ये चारों गुण नष्ट हो जायेंगे। इसलिए ईश्वर अवतार ले ही नहीं सकता, इस प्रकार अवतार मानना मिथ्या है। ऋषि ने कहा कि मूर्त्ति जड़ है, उसको किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जड़ चीज कभी किसी का भला या बुरा नहीं कर सकती, इसलिए मूर्त्ति पूजा करना समय को बरबाद करना है। सामान्यजन कह देता है कि मूर्त्तिपूजा, मोक्ष प्राप्ति के लिए सीढ़ी है, परन्तु महर्षि कहते है कि मूर्त्तिपूजा मोक्ष प्राप्ति के लिए सीढ़ी नहीं खाई है, जिससे मनुष्य अन्धविश्वास में फंसकर नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द अपने जीवन भर ईंट पत्थर खाकर, जहर पीकर अनेक दुःखों, कष्टों व अभावों को सहते हुए दिन रात कठोर परिश्रम करके वेदज्ञान के प्रकाश को केवल भारत देश में ही नहीं बल्कि विश्व में प्रकाशित किया, जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड प्रायः समाप्त हो गया, इसके लिए मानव-मात्र महर्षि दयानन्द का सदैव ऋणी बना रहेगा।

पता : गोविन्दराम एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

"व्यथा"

क्यूँ री माँ,
वह क्रूर-निर्दयी-राक्षस
व्यक्ति मेरा बाप है।
या मेरा जन्म होना स्वयं अभिशाप है॥
ममता की मूरत की आंखों में
किस निर्लज समन्दर का पानी है
मेरी कुर्बानी, तेरी जुबानी
आंसुओं में डूबी, तेरी मेरी कहानी है॥
तंगदिल क्यूँ हो रही नारी
दो कुल की सूत्रधार
क्यूं ... कहलाती बेचारी॥
माँ-पुत्र मोह का मत कर अभिमान।
बिन बेटी के, किस कुल का चढ़ा परवान॥
कन्या भ्रूण के हत्यारों
मां कातिल है या बाप खूनी है।
राखी के दिन पूछ जाकर उससे
आज किस भाई की कलाई सूनी है।

रचयिता -
विजयलता सिन्हा, केलाबाड़ी, दुर्ग (छ.ग.)

ज्वलन्त कोई भी देश अपनी नागरिकता के नियम बना सकता है : सोमेन्द्र आर्य

नागरिकता संशोधन कानून 2019 को लेकर जो समाज में दुष्प्रचार किया जा रहा है। उससे मुस्लिमों की नागरिकता एवं उनके अधिकारों का हनन होगा। यह पूर्ण रूप से असत्य है। इस कानून से किसी मुस्लिम ही नहीं अपितु किसी भी भारतीय नागरिक का कोई भी अहित नहीं है। इस कानून से भारत के किसी भी नागरिक का कोई भी लेना देना नहीं है। विपक्ष द्वारा मुसलामानों को इस कानून के द्वारा डराया जा रहा है। सरकार को चाहिए कि वह नागरिकता संशोधन कानून 2019 के बारे में सही जानकारी प्रसारित करे व विरोध प्रर्दशन के नाम पर दंगा करने वालों पर सख्त कार्यवाही करे। मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि इस कानून पर मुसलमानों को बरगलाया जा रहा है। उन्हें अभी तक इस कानून के बारे में सही जानकारी नहीं है और जिन्हें है वो राजनीतिक स्वार्थ के कारण से बताना नहीं चाहते। एक ई–रिक्शा चालक से बातचीत हुई उसका नाम शहेआलम था मैने उससे पूछा यह जो कानून आया है जिसका मुसलमान विरोध कर रहे हैं यह क्या है? उसने जो जवाब दिया वह आश्चर्यचकित करने वाला था। उसने कहा कि इस कानून के लागू हो जाने के बाद जो व्यक्ति जहाँ 70 वर्षो पहले रहता था यानि की उसके माँ–बाप, दादा–दादी उनको वही जाना पड़ेगा। हम दिल्ली में पैदा हुए। मुझे भी दिल्ली छोड़कर उ0प्र0 जाना होगा जहाँ के हम हैं अभी हमें ये भी नहीं पता कि हमें घर छोड़कर जाना होगा, बेचकर जाना है या सरकार उसका मुआवजा देगी कहने का मतलब है जिसके माँ–बाप जहाँ के थे उसको वही जाना होगा मैने उससे कहा आपसे ऐसा किसने कहा उसने कहा हमारे लोगों में ज्यादातर ऐसी ही चर्चा होती है। वॉटसऐप पर मैसेज आते है वीडियो में बता रहे हैं। मैने उसे सही बताया तो उसने कहा कि हम मजदूरी करने वाले हैं इतना समझ नहीं आता जो हमें बता देते हैं वही सही मान लेते हैं। ऐसे एक नहीं कई उदाहरण है। यह तो पूर्ण रूप से सही है कि विपक्ष द्वारा जनता को इस कानून की गलत परिभाषा बतायी जा रही है। भारत के नागरिकों को समझ लेना चाहिए कि यह कानून नागरिकता देने का है न कि किसी की नागरिकता छीनने का। नागरिकता संशोधन कानून 2019 के अनुसार अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश के अल्पसंख्यक लोगो को नागरिकता दी जाएगी। धार्मिक आधार का दंश झेलने वाले हिन्दू, बौद्ध, सिख, ईसाई, पारसी एवं जैन समाज के लोगों को इसमें शामिल किया गया है। लेकिन सेक्युलर के नाम पर संविधान की दुहाई देकर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। जब 1947 में धार्मिक आधार पर देश का बटवारा भारत–पाकिस्तान के नाम पर हुआ तो दोनों देशों ने अपने अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का वचन दिया था जो 1955 में नेहरू लियाकत समझौते के नाम से जाना जाता है लेकन इस समझौते का किस देश ने पालन किया यह सर्वविदित है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हुए और वो समाप्त कर दिये गये। साल 1951 में भारत में हिन्दू 84.1 प्रतिशत, मुस्लिम 9.8 प्रतिशत थे। वही 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में हिन्दू 79.8 प्रतिशत तथा मुस्लिम 14.2 प्रतिशत जनसंख्या हो गयी। भारत में तो अल्पसंख्यक खूब फले–फूले वो सरकारी, गैर सरकारी शीर्ष पदों तक पहुचें परन्तु पाकिस्तान

में जैसे अल्पसंख्यकों पर धार्मिक कट्टरवाद मानों जैसे कहर बनकर टूटा पाकिस्तान में साल 1947 में अल्पसंख्यक 23 प्रतिशत, मुस्लिम 77 प्रतिशत थे। जो साल 2011 में अल्पसंख्यक मात्र 3.7 प्रतिशत। मुस्लिम 96.3 प्रतिशत हो गये। बांग्लादेश में वर्श 1947 में अल्पसंख्यक 22 प्रतिशत, मुस्लिम 78 प्रतिशत, वर्ष 2011 में में अल्पसंख्यक 7.8 प्रतिशत, मुस्लिम 92.2 प्रतिशत हो गये। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंग्लादेश में अल्पसंख्यकों का जीवन नर्क बना दिया गया। लोग अपने घर बार छोड़कर भागने को विवश हुए, जो भाग सकते थे वो भागे जो नहीं भागे उनकी महिलाओं के साथ जबरदस्ती सामूहिक बलात्कार किये गये। धर्म परिवर्तन किया गया। पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग ने 2010 में रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें कहा गया कि पाकिस्तान में प्रत्येक माह 25 बच्चियों, लड़कियों का अपहरण, जबरन इस्लाम में कन्वर्जन और बाल विवाह कराया जा रहा था। बाद के सालों में ये आंकड़ा और बढ़ गया। नए आंकड़ों के अनुसार सिंध में प्रतिदिन एक हिन्दू लड़की अगवा हो रही है। 1947 में पाकिस्तान में लगभग 1000 मंदिर थे, अब मात्र 20 मंदिर ही बचे है। मंदिरों को गिराकर मस्जिद, मजार, मदरसा और होटल बना दिया गये। 2012 की एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में 70 प्रतिशत अल्पसंख्यक महिलाएं यौन शौषण का शिकार होती है। अकेले सिंध में हर महीने 20 से 25 अल्पसंख्यक लड़कियों का अपहरण कर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। वर्तमान की घटना है ननकाना साहिब के तम्बू साहिब गुरूद्वारे के ग्रन्थी भगवान सिंह की 19 वर्षीय बेटी को 28 अगस्त 2019 की रात को बन्दूक के बल पर उठा लिया गया। उसका जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया गया। तब तो धर्म निरपेक्षता का ढिढोरा पीटने वाले तथाकथित राजनेताओं ने आवाज नहीं उठायी। बांग्लादेश का कुख्यात शत्रु संपत्ति कानून हिंदुओं की लाश को नोचने वाला कानून है। 2000 में प्रकाशित एक रिपोर्ट "इन्क्वायरी इन टू कॉजेस एण्ड कान्सीक्वेन्सेज ऑफ दि प्राइवेशन ऑफ हिन्दू माईनॉरिटी ऑफ बांग्लादेश" के अनुसार 9 लाख 25 हजार हिंदू परिवार इस कानून से प्रभावित हुए हैं। जिनकी संपत्ति इस कानून के अन्तर्गत जब्त की गयी है। उनमें नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन भी है। धार्मिक आधार पर तीन देशों के प्रताड़ित अल्पसंख्यकों को यदि नागरिकता दी जा रही है तो लोगों को इसमें परेशानी क्यों है? कोई भी देश अपनी नागरिकता के नियम बना सकता है। भारत के संविधान में भी संसद को ही नागरिकता के कानून बनाने का अधिकार है। यह कानून प्रक्रिया के तहत बनाया गया है। पहले लोकसभा फिर राज्य सभा के बहुमत से पास हुआ है। उसके बाद महामहिम राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद ही कानून बना है। यह लोक तान्त्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है। जो संविधान के अनुच्छेद 14 समानता व समता की दुहाई देते हैं। उनको स्पष्ट याद रखना चाहिए यह अनुच्छेद 14 केवल भारतीय नागरिकों को समानता व समता का अधिकार देता है। बाहरी लोगों को नहीं, जो देश के अभी नागरिक बने ही नहीं है। संविधान की गलत व्याख्या न पेश करें। जो मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल, अमरिंदर सिंह पंजाब, भूपेष बघेल छत्तीसगढ़, कमलनाथ म0प्र0, पी0विजयन केरल, सर्वगुण संपन्न हरिश्चन्द्र केजरीवाल दिल्ली कानून का विरोध कर रहे हैं और संविधान के अपमान की बात कर रहे हैं उनको स्मरण होना चाहिए कि संविधान की सातवी अनुसूची में संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची में केन्द्र एवं राज्यों को विधायी शक्तियों का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। संघ सूची की प्रविष्टि 17 के अनुसार नागरिकता से जुड़े सभी मामलों पर कानून बनाना पूरी तरह संघीय सरकार के अधि ाकार में आता है। संविधान के अनुसार किसी भी राज्य के पास संघ द्वारा परिवर्तित उस कानून को खारिज करने का अधिकार नहीं जो विषय विशुद्ध रूप से संघ के अधिकार की परिधि में आता है।

संविधान के अनुच्छेद 256 और 257 के तहत संसद द्वारा बनाए कानून और केन्द्र सरकार के दिशा निर्देशों को मानने के लिए राज्य सरकारे संवैधानिक तौर पर बाध्य है। संविधान एवं बाबा भीमराव अम्बेडकर को ढाल बनाकर अपनी राजनीति करने वालों को यह भी पढ़ लेना चाहिए कि विभाजन के समय डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने अपनी किताब "थॉट्स आन पाकिस्तान" में स्पष्ट कहा था कि यदि पाकिस्तान बनना अनिवार्य है, तो तबादला–ए–आबादी आवश्यक है। यदि आबादी की अदला बदली नहीं की गयी तो भारत में 50 साल बाद वैसी ही स्थिति होगी जो आज है। विभाजन के बाद उन्होंने सभी हिंदुओं से पाकिस्तान छोड़कर भारत आने की अपील की थी और कहा था "आप इस्लामी राज्य में सम्मानपूर्वक जीवन नहीं जी सकोगे" संविधान का ढिंढोरा पीटने वाले व बाबा साहेब की फोटो लगाकर इस कानून का विरोध करने वालों को देश को बताना चाहिए वो गलत है या अंबेडकर गलत थे। विरोध करने वालों को बताना होगा वो अपने संविधान को मानते है या अंबेडकर द्वारा बनाये गये संविधान को, अम्बेडकर जी द्वारा बनाये गये संविधान के अनुसार किसी इस कानून से किसी भी भारतीय नागरिक की नागरिकता पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है। सरकार को चाहिए कि वह विपक्ष द्वारा बौखलाहट में फैलाये जा रहे दुष्प्रचार का सामना करें व सही जानकारी लोगों तक पहुंचाये। विरोध के नाम पर हिंसक प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। जो भी राजनीतिक संगठन या सामाजिक संगठन विरोध प्रदर्शन करें और उसमें सार्वजनिक संपत्ति, व्यक्तिगत संपत्ति का नुकसान हो उसकी भरपाई उसी से की जाए व मुकदमा दर्ज किया जाये। भारतीय मुसलमानों एवं गरीब नागरिकों को बिल्कुल भी ड़रने की आवश्यकता नहीं है। वे भारत के नागरिक थे, हैं और हमेशा रहेंगे।

पता : रिसर्च स्कालर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

वशीकरण -मन्त्र

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्, क्रुद्धमञ्जलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन, याथातथ्येन पण्डितम्।। (चाणक्य)

भावार्थ :- नीतिशास्त्रमर्मज्ञ चाणक्य के मतानुसार निम्नाङ्कित व्यक्तियों को निम्न प्रकार से बुद्धिमान पुरुष वशीभूत करें।

१. जो लोभी पुरुष हो उसे धन के द्वारा आधीन करना चाहिए। आप उसे धन दे दीजिए वह आपका दास बन जाएगा।

२. क्रोधी जो हो उसे नम्रता से हाथ जोड़कर आप वशीभूत कर सकते हैं। क्रोधी को शान्त करने का और कोई मार्ग नहीं है।

३. मूर्ख को आप, जैसा वह बोले हाँ में हाँ मिलाकर ही अपना बना सकते हैं। तर्क-वितर्क से वह आपकी बात नहीं मान सकता।

४. पण्डितों को आप यदि अपना कल्याण चाहें तो यथार्थ स्थिति बतला दें। सत्य से बढ़कर पण्डितों को प्रसन्न करने का और कोई मार्ग नहीं है। यतः जो पण्डित है, वह तो बिना कहे-बतलाये ही सब कुछ जान जावेगा और समझ लेगा, अतएव विचक्षण पुरुष से कभी कोई बातें नहीं छिपानी चाहिए।

- सुभाषित सौरभ

उपादेयात्मक

"सर्वश्रेष्ठ है मानव धर्म"

- गौरीशंकर वैश्य "विनम्र", संस्थापक अध्यक्ष,
विनम्र बाल साहित्य संस्थान, लखनऊ

भारतीय मनीषियों ने अध्ययन, अनुभव और चिंतन-मनन के आधार पर सुख-शांति पूर्ण जीवन-यापन की जो जीवन-पद्धति खोज निकाली है, उसको धर्म का नाम देकर दस लक्षणों अथवा कर्त्तव्यों की सीमा बांधा गया है। इन दस लक्षणों के नाम इस प्रकार है - धृति (धैर्य), क्षमा, दमन, अस्तेय (चोनी न करना), शौच (पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य तथा अक्रोध धर्म ग्रन्थों में कहा गया है - नहि मानवात श्रेष्ठतरं हि किंचित अर्थात् सृष्टि में मानव से अधिक श्रेष्ठ और कोई नहीं। साथ ही यह भी सर्वसत्य है कि मानव धर्म सब धर्मों का सार है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था - सच्ची ईश्वरोपासना यह है कि हम अपने मानव बन्धुओं की सेवा में अपने आप को लगा दें। मानव धर्म वह व्यवहार है जो मानव जगत में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, एक दूसरे का सम्मान करना आदि सिखाकर हमें श्रेष्ठ आदर्शों की ओर ले जाता है जिसके अनुसरण करने से सबको प्रसन्नता और शांति प्राप्त हो सके।

धर्म शब्द संप्रदाय से भिन्न व्यापक परिभाषा लिये हुए है। जहां सम्प्रदाय, उपासना पद्धति, कर्मकाण्डों और रीतिरिवाजों का समुच्चाय है, वहां धर्म एक प्रकार से जीवन जीने की शैली का ही दूसरा नाम है। संप्रदाय एवं मान्यताएँ, देश, काल, क्षेत्र परिस्थिति के अनुसार बदलती रह सकती है किन्तु धर्म शाश्वत-सनातन होता है। सभी मत और संप्रदाय मनुष्य के अपने हैं और सभी भव्य हैं, परन्तु मानव जाति का कल्याण मानव धर्म के प्राणतत्व के अवलंबन से ही संभव है।

जैसे कि पेड़-पौधे और वनस्पतियां अपना वनस्पति धर्म निभाते हैं और वे बिना किसी प्रतिरोध के सबको छाया और फल-फूल देते हैं, वे किसी से कोई आशा या अपेक्षा नहीं करते। सूर्य अपना सूर्यत्व धर्म निभाते हुए समय से प्रकाश और गर्मी देने में कोई भेदभाव या विलंब नहीं करता, ठीक उसी प्रकार हमारा मानव धर्म है जिससे संपूर्ण मानव जाति का सदैव भला होता है। मानव धर्म समस्त कल्याणकारी कार्यों का समुच्चाय है जिससे समाज, देश और विश्व लाभान्वित होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसी मानव धर्म को संक्षेप में स्पष्ट किया है -

परहित सरिस धर्म नहि भाई।
परपीड़ा सम नहि अधमाई॥

अर्थात परोपकार के समान दूसरा कोई धर्म नहीं और दूसरे को कष्ट पहुंचाने के समान अन्य कोई अधर्म नहीं है।

ईश्वर एक है, समूची मानव जाति एक है, यह ध्रुवसत्य है। प्रेम, त्याग, बलिदान, सेवा, भाईचारा, सभी धर्मों के प्रति समान आदर रखना, यही है मानव धर्म के प्रति सच्ची आस्था। मानव का सोते, जागते, उठते, बैठते, **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया"** की भावना से ओतप्रोत जीवन ही, मानव धर्म है।

सारे संसार में कोई दुःखी न हो, कोई भूखा न रहे, सबके पास सिर छिपाने के लिए घर रहे, यही तो है मानव धर्म का चरम लक्ष्य। कविवर जयशंकर प्रसाद ने इसी कामना को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है -

औरों को हंसते देखो, हंसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।

मानव धर्म का स्पष्ट सिद्धान्त है-जियो और जीने दो।

यह ब्रह्माण्ड हमारा, यह हमारा घर है, यह धरती हमारी माँ है और आकाश हमारा पिता है। यह व्यापक विश्व हमारे लिए है और हम इसके लिए हैं। वृक्ष, पशु - पक्षी, वन, पर्वत, नदी आदि संपूर्ण प्रकृति हमारी सहचर है, जिसका जीवित-अस्तित्व है। जहां कहीं जीवन है, वहां मानव धर्म का विस्तार है। हमें इनका संरक्षण, पोषण और

संवर्द्धन करना चाहिए।

आज मानव अपने मानव धर्म से विचलित हो रहा है। वह लोभ-लालच में प्रकृति का दोहन कर रहा है और पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। भौतिक मोहजाल में फँसकर वह संग्रह एवं दूसरे का भाग हड़पने में लगा हुआ है। आदर्श-पथ में विपथगामी होकर अत्याचार, अनाचार और दुराचार में लिप्त हो रहा है। एक ओर कुछ लोक भुखमरी और कुपोषण के शिकार हैं तो दूसरी ओर अनेक लोग अन्न-धन के भण्डार भरने में लगे हुए हैं। यह विषमता मानव धर्म के अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती है। साधु, संत, विचारक, विद्वान् और उत्तरदायी जन इस गंभीर समस्या पर चिंतन-मनन में तत्पर होकर वांछित निदान करें, यह अत्यन्त सोचनीय विषय है।

जीवन में दैन्यता, कुटिलता, असुरता जैसी कुप्रवृत्तियां के द्वारा आक्रमण होते रहते हैं, इससे कष्ट और परेशानियां बढ़ जाती है। तो उस उद्धारकर्ता है मानव धर्म। गीता में दिया हुआ ईश्वर का आश्वासन है कि धर्म के प्रति ग्लानि और अधर्म का अभिवर्द्धन होने पर साधुता की रक्षा और दुष्टता का शमन करने के लिए संतुलन स्थापित करने वाली शक्तियाँ को अवतरित करता हूं। इस चिन्तन के अनुसार सत्य-शिव-सुन्दर भावों युक्त होकर मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर क्रमशः मानवत्व, देवत्व और अंत में भगवत्व की कोटि में आता है। अतः आदर्शों के अनुसार आचरण ही सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म है।

जिसके जीवन में मानवता की सुवास होती है, ऐसा जीवन ही मानव-जीवन कहा जाता है। आए दिन समाचार पत्रों में समाचार आते हैं कि बस, ट्रेन, बाढ़, भूकंप की दुर्घटना हुई। आसपास के लोग वहां पहुंच कर घायलों को अस्पताल पहुंचाने के बजाय उनका कीमती सामान लूटने में जुट गए, यह मानवता का घिनौना रुप है। यदि मनुष्य धर्म अपनाए तो उसका जीवन चमक उठेगा, वह धन्य हो जाएगा। दुःखी को देखकर सबके मन में करुणा का झरना फूट पड़ता है। वही मानव धर्म है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने मानव धर्म को नपे-तुले शब्दों में व्यक्त किया है -

फूलों पर आंसू के मोती, और अश्रु में आशा।
मिट्टी के जीवन की छोटी, नपी-तुली परिभाषा।

मानव धर्म का आदेश हमारे चिन्तन और दृष्टिकोण की व्यामकता के लिए है। मानव जाति की रक्षा, धारण, पोषण-व्यवस्था, समाज में सद्गुणों की वृद्धि-शुद्धि के लिए ही मानव धर्म की अत्यन्त आवश्यकता है। उपनिषदों में स्पष्ट निर्देश है - **त्येन त्यक्तेन भुंजीथः** अर्थात् जिन्होने त्यागा, उन्होने भोगा और जिन्होने पकड़ा, वे चूक गए। कबीरदास जी ने भी समझाया है - दोनों हाथ उलीचिए। जितना दान देने हेतु उलीच सकोगे, उतने तुम भर जाओगे।

आज के युग की मांग है - एक नई क्रांति लाने की, जिसमें सब एक होकर मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु पूरी प्रकृति के लिए प्राकृतिक धर्म निभाने का हम संकल्प लें और अपने अमूल्य समय से थोड़ा समय निकाल कर धन और श्रम को जनहितकारी-प्राकृतिककल्याणकारी गतिविधि में व्यय करें, जिससे जनमानस में जागृति आए और प्रत्येक मानव, मानव धर्म का आचरण करते हुए, परिवार, देश और विश्व का कल्याण कर सके।

सारतः यही सत्य हृदयंगम करना चाहिए -
मानवता की सुरसरि धारा, मानव धर्म।
प्राणिमात्र का एक सहारा, मानव धर्म।
मानस, कर्म और वाणी से करें 'विनम्र' सदा हित।
आदर्शों का खुला पिटारा, मानव धर्म।

पता : ११७, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ - २२६०२२

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्ना और मूर्खता है। स.प्र.सप्तम् समु., पृष्ठ १८८

देववाणी

केन्द्रीय संस्कृत विवि स्थापित किया जाना जरुरी

संकलनकर्ता :
आचार्य काशीनाथ चतुर्वेदी

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम लोकसभा ने पारित कर दिया है। इस अधिनियम से पहले से चल रहे मानित विश्विद्यालय के दर्जे वाले तीन संस्कृत शिक्षण संस्थानों को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयों का दर्जा प्राप्त होगा। संस्कृत के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया जाना आवश्यक है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ऐसे केन्द्र की वास्तव में जरुरत है, जहां न केवल भारतीय अपितु बाहर से भी आकर लोग संस्कृत पढ़ सकें, सीख सकें। इससे संस्कृत की पारंपरिक संस्कृत अध्ययन आधुनिक शिक्षा के साथ उन्नत किया जा सके। पुरातन ग्रन्थों पर आधुनिक पद्धति से शोध किया जा सके। वेदादि-शास्त्रों के अध्ययन के साथ ही गणित, विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन की पढ़ाई की जा सके। ऐसे में ये विश्वविद्यालय देश-विदेश के संस्कृत शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण शिक्षण केन्द्र बनेंगे, जिससे भारतीय ज्ञान-विज्ञान पूरी दुनिया के सामने रखे जा सकेगा। देश की आजादी के बाद १९५६ में पंडित जवाहरलाल नेहरु ने पहला संस्कृत आयोग बनाया, जिसके अध्यक्ष जाने माने भाषाविज्ञानी डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी थे। इस आयोग की सिफारिश पर केन्द्र सरकार ने तीन संस्कृत शिक्षण संस्थान स्थापित किए। परम्परागत संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति में १९६१ में, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली १९६२ में और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली १९७० में स्थापित किए गए। अब इन तीनों संस्थानों को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की स्रोत भाषा संस्कृत देश की भाषाई तथा सामाजिक एकता में पिरौने का मजबूत सूत्र है। यह सिर्फ पूजा-पाठ और कर्मकांड तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आयुर्वेद, गणितीय प्रणाली, संगीत, शिल्प शास्त्र, वास्तु शास्त्र, कृषि शास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोल, विज्ञान, चिकित्सा एवं योग समेत कई विधाएं हैं, जो मानव समाज के लिए बहुत उपयोगी है। इसमें दर्शन, अध्यात्म और मानवतावादी साहित्य का खजाना है। भारत में जितनी संस्कृतियां जन्मीं और पलीं-बढ़ी, संस्कृत उनकी आधार भाषा है। संस्कृत का दायरा किसी पंथ परम्परा या विधान का अनुगामी नहीं है, यह सार्वभौम तथा सार्वकालिक है। इसी नाते 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्म' जैसे अमर वाक्य का सिद्धान्त सारे धर्मों, पंथों और परम्पराओं को स्वीकृत है। वेद-पुराण और रामायण-महाभारत के श्लोक सनातन परम्परा के वाहक हैं। पर क्या इस नई शुरुआत से संस्कृत के दिन फिरेंगे ? चारों ओर यह सवाल उठाया जा रहा है। इस सवाल का संबंध संस्कृत के मौजूदा हालातों से हैं। साल २०११ की जनगणना के हिसाब से २४,८२१ लोगों ने संस्कृत को अपनी मातृभाषा बनाया है। हालांकि ये आंकड़ा भी पिछली जनगणना से बढ़ा है। साल २००१ में मात्र १४,१३५ लोगों ने संस्कृत को मातृभाषा बनाया था। भारत मातृभाषा के रुप में दर्ज २३ भाषाओं में संस्कृत सबसे आखिरी पायदान पर है। क्या इससे माना जा सकता है कि संस्कृत आम बोलचाल की भाषा के रुप में लोकप्रिय नहीं हैं ? आज संस्कृत के शिक्षण संस्थान अच्छे दौर में नहीं है। केन्द्रीय और राज्यों के संस्कृत विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या

लगातार घट रही है। शिक्षकों के हजारों पद खाली हैं। शोध और लेखन की गति बहुत धीमी है। आधुनिकता से ताल मिलने में इन संस्थानों को कई कठिनाईयां है। ऐसे में क्या केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना प्रभावी होगी ? इसका उत्तर किसी के पास नहीं है। अभी संस्कृत अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए जूझ रही है। क्या संस्कृत का अस्तित्व रहना जरूरी है ? इस सवाल का जवाब हाँ और ना में नहीं हो सकता। पर यह सच है कि हिन्दी समेत सारी भारतीय भाषाओं के बचे और बने रहने के लिए संस्कृत जरुरी है। संविधान के अनुच्छेद ३५१ में लिखा है, राष्ट्रभाषा हिन्दी की शब्दावली मुख्य रुप से संस्कृत से ली जायेगी। वस्तुतः जब संस्कृत का हिमालय द्रवित होता है तभी भारतीय भाषाई नदियों में पानी आता है। पर अभी खुद संस्कृत को सहारे की जरुरत है। यह सहारा समाज और सरकार दोनों को देना होगा। उसे ऐसे आधुनिक संस्कृत के अध्ययन एवं शोध का माहौल बनाया जा सके। आज संस्कृत के पठन-पाठन का क्षेत्र संकीर्ण होता जा रहा है। आयोग का कोई समुचित प्रबंध न होने से संस्कृत विद्यालयों में पढ़ने वालों की संख्या चरमराती जा रही है। जो लोग संस्कृत के महत्व को समझते हैं, उनको इस ओर ध्यान देना चाहिए और केन्द्रीय तथा प्रादेशिक शासनों पर दबाव बनाना चाहिए कि इन बातों के लिए समुचित प्रबंध करें, नहीं तो संस्कृत कहीं मृत भाषा होकर ही न रह जाए। यदि ऐसा होता है तो इसका एक भयंकर परिणाम यह होगा कि आने वाली पीढ़ियों को अपनी संस्कृति के भंडार और उद्‌गम स्रोत से संबंध टूट जाएगा, जो केवल भारत की ही नहीं अपितु पूरे मानव जगत की क्षति होगी।

साभार - अमृत संदेश समाचार पत्र

जयन्ती — उच्च कोटि के विद्वान व प्रगल्भ लेखक - पं. चमूपति

चमूपति एक उच्च कोटि के विद्वान, प्रगल्भ लेखक, भावुक कवि थे। इनका जन्म १५ फरवरी १८९३ को बहावलपुर (पाकिस्तान) में हुआ था। पिता श्री मेहता वसंदाराम और माता श्रीमती लक्ष्मी देवी थी। इनका बाल्यकाल का नाम चम्पतराय था। मेट्रिक परीक्षा पास कर ये बहालपुर के इजर्टअन कालेज में प्रविष्ट हुये। यहाँ पढ़ते हुए आपने उर्दू में कविता लिखना आरंभ कर दिया। सर्वप्रथम सिख धर्म का ग्रन्थ जपजी का उर्दू काव्य अनुवाद किया। एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप बहावलपुर राज्य में अध्यापक बन गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में अभी स्थिरता नहीं आई थी। वे प्रारंभ में सिख धर्म की और आकृष्ट हुए परन्तु पुनः नास्तिकता के विचारों ने जोर मारा। इसी बीच उन्हें महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला। नास्तिकता के विचारों से तो छुटकारा मिला परन्तु अब उनका झुकाव शंकर वेदांत की ओर हो गया। धीरे-धीरे वेदान्त के प्रति भी आस्था शिथिल होने लगी, परन्तु मूर्तिपूजा के प्रति आस्था बढ़ने लगी। अंततः चम्पतराय के धार्मिक विचारों की चरम परिणिति आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म की विचारधारा को स्वीकार कर लेने में हुई। अब वे चम्पतराय से चमूपति बन गये और राज्य सेवा को छोड़कर गुरुकुल मुल्तान में चले गये। दो वर्ष तक इस गुरुकुल प्रतिष्ठाता पद पर कार्य किया। आचार्य रामदेव जी की प्रेरणा से पं. चमूपति लाहौर आ गये और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्य करने लगे। उन्होने सभा की आजीवन सेवा का व्रत लेने वाले लोगों ने दयानन्द सदन की स्थापना की। चमूपति भी सदन के सदस्य बने और प्रतिज्ञा ली, इससे पूर्व मैं सोच समझकर अपनी बुद्धि से स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करता था। मैं अपनी वह स्वतंत्रता आर्य प्रतिनिधि सभा को अर्पण कर दी है। अब मैं वह करूंगा जो सभा कहेंगी। अब मैं अपने लिये कुछ नहीं सोचूंगा। उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आर्य का संपादक कुछ वर्ष लाहौर में रहकर किया। सन् १९२७ में चमूपति जी गुरुकुल कांगड़ी में आचार्य पद पर नियुक्त हुए। १९३३ में वे गुरुकुल के अधिष्ठाता बने। १५ जुलाई १९३७ को उनका निधन हुआ। उस ध्येनिष्ठ महापुरुष के पावन चरणों में कोटिशः नमन। **(सम्पादक)**

"ऋषि दयानन्द संसार के अद्वितीय महान युगपुरुष"

पुण्य स्मरण

- मनमोहन कुमार आर्य

जीवात्मा एक अत्यन्त अल्प परिमाण वाली चेतन सत्ता है। यह अल्प ज्ञान एवं अल्प शक्ति से युक्त होती है। इसका स्वभाव व प्रवृत्ति जन्म व मरण को प्राप्त होना है। जीवात्मा में मनुष्य व अन्य प्राणी-योनियों में जन्म लेकर कर्म करने की सामर्थ्य होती है। मनुष्य योनि में जन्म का कारण इसके पूर्वजन्म व जन्मों के वह कर्म होते हैं, जिनका भोग करना शेष रहता है। ईश्वर जीवात्मा को इसके पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार जन्म व जाति-आयु-भोग प्रदान करता है। सभी जीवात्मायें एक ही प्रकार की हैं। इनमें सत्तात्मक दृष्टि से कोई भेद नहीं है। सभी जीवात्मायें अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, अविनाशी, एकदेशी, ससीम तथा जन्म-मरण धर्मा है। सभी जीवात्माओं को अनन्त बार अनेक वा सभी योनियों में जन्म व मृत्यु प्राप्त हो चुकी है। सभी जीवात्मायें कई-कई बार मोक्ष में भी आती जाती रही है। जीवात्मा के जब पाप व पुण्य कर्म बराबर होते हैं अथवा पाप कम तथा पुण्य अधिक होते हैं, तब परमात्मा उन्हें मनुष्य योनि में जन्म देते हैं। शुभ कर्मों की जितना अधिकता और पाप कर्मों की जितनी न्यूनता होगी उतना ही जीवात्मा को मनुष्य योनि में उत्तम, मध्यम या साधारण कोटि में जन्म मिलेगा। परमात्मा जीवात्मा के कर्मों की अपेक्षा से त्रिकालदर्शी है। वह जीवात्मा के कर्म संग्रह व प्रारब्ध के अनुसार जीवात्मा को जन्म देता है। जीवात्मा जन्म लेकर अपनी पूर्व अर्जित ज्ञान व कर्म सम्पदा को बढ़ाता व अपने कर्मों से न्यून भी करता है।

ऋषि दयानन्द के जीवन पर विचार करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उन्होंने गुजरात प्रान्त में मोरवी राज्य के टंकारा नाम ग्राम में एक निष्ठावान पौराणिक ब्राह्मण पं. करसनजी तिवारी के यहां जन्म लेकर अपने पूर्व संस्कारों व प्रारब्ध के अनुसार अपने ज्ञान व सद्कर्मों में अपूर्व वृद्धि की थी। उनके जैसा सत्यान्वेषी एवं ईश्वर को तर्क तुला पर तोल कर मानने वाला दूसरा कोई महापुरुष उनसे पूर्व व पश्चात उत्पन्न नहीं हुआ। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के विद्वानों के उपदेश, शास्त्रीय अध्ययन व योग विधि से जानकर और समाधि अवस्था उसका साक्षात्कार किया था। उन्होंने ईश्वर विषयक अपने ज्ञान एवं साक्षात्कार के अनुभवों का लाभ केवल अपने मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं रखा, अपितु उसे मनुष्य मात्र के हित, सुख व कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द ने अपने ज्ञान व अनुभव का लाभ समस्त मानव जाति को प्रदान करने के लिए अपना सारा जीवन सत्य ज्ञान के प्रचार, अविद्या निवारण, देश को स्वतन्त्र कराने की प्रेरणा करने और उसके उपाय सुझाने, समाज में व्याप्त अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मिथ्या परम्पराओं का सुधार करने तथा महाभारत काल के बाद सन्ध्या व देवयज्ञ आदि विस्मृत वेद विहित अनुष्ठानों का प्रचार करने आदि कार्यों में व्यतीत किया। मनुष्य जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं जिस पर उन्होंने विचार न किया हो और वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्ति के आधार पर चिन्तन-मनन व विश्लेषण कर उसका समाधान न किया हो। न केवल देश के अपितु विश्ल के लोगों ने अपने-अपने मतों के पक्षपात के कारण उनके कार्यों के महत्व को समझने का प्रयास नहीं किया। ऋषि

दयानन्द ने सत्योपदेश व वेदप्रचार के परिणामों को ध्यान में न रखकर मनुष्य मात्र के हित, कल्याण तथा देशहित को अपनी दृष्टि में रखकर निष्पक्ष एवं उदारता का परिचय देते हुए सबको सन्मार्ग बताया। उसका दियां हुआ वैदिक जीवन दर्शन पूर्ण मानव जाति के जीवन के लिये उपादेय जीवन-दर्शन है जिसे अपनाकर मनुष्य लोक व परलोक में उन्नति, सुख प्राप्ति तथा दुःखों से सर्वथा मुक्त होकर मृत्यु के पश्चात मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बन सकता है। उन जैसा जीवन महाभारत युद्ध के बाद किसी महापुरुष का जीवन दृष्टिगोचर नहीं होता। ऋषि दयानन्द सद्कर्मों वा सदाचरण सहित सद्ज्ञान से युक्त होने के कारण धन्य थे और उन्होंने हमें भी सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेदभाष्य आदि अनेक ग्रन्थ देकर हमारा ज्ञानवर्धन किया जिससे हम धन्य हुए हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपनी आयु के २१ वर्ष पूर्ण कर ईश्वर के सच्चे स्वरुप की प्राप्ति एवं मृत्यु पर विजय पाने अर्थात् जन्म व मरण से अवकाश प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने पिता का गृह त्यागा था। वह देश के समस्त धार्मिक व तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक व सामाजिक विद्वानों से मिले थे और उनसे ईश्वर के सत्य स्वरुप एवं मृत्यु पर विजय के उपायों पर चर्चायें की थी। उन्हें योग विद्या के योग्य गुरु भी मिले जिनसे प्रशिक्षण प्राप्त कर वह योग के सफल अभ्यासी व सिद्ध पुरुष बने थे। उनके आचरणों व व्यवहारों से अनुभव होता है कि लगभग ३५ वर्ष की आयु होने पर सन् १८६० में वह दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती जी के निकट मथुरा में अध्यनार्थ उपस्थित होने से पूर्व उनको ईश्वर के सत्यस्वरुप का ज्ञान व साक्षात्कार हो चुका था। गुरु विरजानन्द सरस्वती जी से उन्होंने वेदांगों मुख्यतः शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि का अध्ययन किया था। वेद विषयक सभी प्रकार की आवश्यक चर्चायें भी उन्होंने गुरुवर से अवश्य की होंगी। इन सब कारणों से ही गुरुजी का दयानन्द जी के प्रति असीम स्नेह व प्रेम था। वह दयानन्द जी के वेदांगों के ज्ञान सहित योग में उनकी उपलब्धियों से भी परिचित थे और उन्होंने अनुभव किया था कि उनका शिष्य दयानन्द संसार में व्याप्त वा प्रचलित अविद्या को दूर कर वेद विद्या का प्रकाश कर सकता है जैसे ज्ञान का प्रकाश वैदिक युग में मुख्यतः आर्यावर्त वा भारत में था।

ऋषि दयानन्द ने इस कार्य को अपने जीवन का एक-एक क्षण व पल का उपयोग करते हुए किया भी। विद्या पूरी करने के बाद गुरु की प्रेरणा से उन्होंने विद्या के पर्याय चार वेदों का प्रचार करने का निश्चय किया। उन्होंने इसके लिये वेदों को प्रापत कर उनका गहन अध्ययन व मनन किया था। उस समय का समाज वेद विरुद्ध मान्यताओं, मूर्तिपूजा, फलित-ज्योतिष, ईश्वर के अवतार की मान्यता, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, बाल व युवा विधवाओं की दयनीय दशा, समाज में जन्मना जातिवाद की वेद विरुद्ध अनेक प्रथाओं से ग्रस्त था। ऋषि दयानन्द जी वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार, असत्य के खण्डन तथा सत्य के मण्डल के महत्व से भली भांति परिचित हो चुके थे। अतः उन्होंने समाज सुधार का डिण्डिम ोष किया था। उन्होंने राम व कृष्ण आदि अवतार मानने व उनकी मूर्तियों को मन्दिरों व घरों में स्थापित कर उनकी पूजा करने का निषेध व खण्डन वेद प्रमाणों, तर्कों व युक्तियों से किया। पूरे देश में कोई विद्वान ऐसा नहीं था जो उनके किसी तर्क व युक्ति का खण्डन व समाधान कर सके। उस समय के निष्पक्ष एवं विवेक बुद्धि रखने वाले सभ्य पुरुषों को ऋषि दयानन्द की बातें उचित प्रतीत हुई थी। ऋषि दयानन्द जी की सभाओं में बड़ी संख्या में लोग आते थे और उनके वैदिक मत की दीक्षा लेते व उनके ग्रन्थों को प्राप्त कर उनका स्वाध्याय कर उनके अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करते थे। इस कारण से अनेक लोगों के आर्थिक स्वार्थों को हानि पहुंच रही थी। वह सब मत-मतान्तर वाले लोग एक जुट होकर उनका विरोध करने लगे। किसी ने भी समझने का प्रयत्न नहीं किया। एकान्त में वह सब अपने अपने मतों की निरर्थकता को जानते व बताते थे। सत्य को स्वीकार करने व स्वार्थों को छोड़ने का सामर्थ्य अधिकांश लोगों में नहीं था। ऐसा होने पर भी उस समय के अनेक

पौराणिक विद्वानों सहित अन्य मतों के भी कुछ लोग वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से प्रभावित होकर वेद मत के शरण में आयें और उन्होने ऋषि दयानन्द के प्रति अपनी सद्‌भावनायें व्यक्त की। इस प्रकार ऋषि दयानन्द के द्वारा भारत में धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों, परम्पराओं व कुरीतियों पर प्रहार हुआ जिसकी गूंज विश्व के अनेक देशों में पहुंची और देश विदेश के अनेक विद्वानों ने ऋषि दयानन्द के प्रति सहानुभूति एवं उनके विचारों के प्रति सहमति भी व्यक्त की।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में सत्य का अनुसंधान कर ईश्वर के सच्चे स्वरुप का पता लगाया, ईश्वर के प्रति मनुष्य मात्र के कर्तव्यों को जाना और उनका सर्वत्र प्रचार किया। ऋषि दयानन्द का ज्ञान वेद प्रमाणों से युक्त होने सहित तर्क व युक्तियों पर आधारित था। ऋषि दयानन्द का कार्य अभूतपूर्व कार्य था। ईश्वर के जिस सत्य स्वरुप तथा उपासना पद्धति का ऋषि दयानन्द ने प्रचार-प्रसार किया उस स्वरुप से उनके समय के विश्व का जनसमुदाय सर्वथा अनभिज्ञ था। स्वाध्याय न करने व सत्यस्वरुप के ज्ञान के प्रति इच्छा के अभाव के कारण विश्व के अधिकांश लोग आज भी अविद्या से युक्त हैं और मिथ्या बातों को ही मानते हैं। ऋषि दयानन्द के समय में ईश्वर के सत्यस्वरुप से भिन्न, अवैदिक अज्ञानता से युक्त ईश्वर के अनेक गुणों आदि की स्तुति व उपासना प्रचलित थी। ऋषि दयानन्द के सभी सिद्धान्त तर्क, युक्ति व सृष्टिक्रम में सर्वथा अनुकूल है। अन्य मतों में ऐसा नहीं है। ऋषि दयानन्द ने धार्मिक एवं सामाजिक अन्धविश्वासों व परम्पराओं का भी पूरी सामर्थ्य से विरोध किया। इसके लिए उन्होने अपने प्रामों को भी जोखिम में डाला। अनेक बार उसके विरोधियों ने उसकी हत्या करने के षड़यंत्र रचे तथापि ऋषि दयानन्द ने इनकी चिन्ता न कर मानवमात्र के हितकारी कार्यों को प्रभावित नहीं होने दिया और इनको पूरे उत्साह एवं पुरुषार्थ से करते रहे। अन्ततः वह कुछ ताकतों के षड़यन्त्रों का शिकार होकर बलिदान को प्राप्त हो गये। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सरकार ने सभी मत-मतान्तर उनके विरोधी थे। ऋषि दयानन्द की विचारधारा ने सबका आधार कमजोर किया था। वह एक प्रकार से ज्ञान-विज्ञान के सम्मुख अप्रासंगिक से हो गये थे। सत्य को स्वीकार करने का साहस किसी में नहीं था। कोई मत व विद्वान अपने मत की मान्यताओं को लेकर उनके पास चर्चा व शास्त्रार्थ करने नहीं आता था। यदि कोई आया भी तो ऐसा अपवादरुप में ही हुआ। अपनी मृत्यु से पूर्व ऋषि दयानन्द अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर गये। उनके सिद्धान्तों के अनुरुप जीवन पद्धति को अपनाकर ही मनुष्य श्रेष्ठ व आदर्श वैदिक जीवन व्यतीत करते हुए मोक्ष को प्राप्त होकर जन्म-शरण के बन्धनों से छूट कर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त हो सकता है।

ऋषि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। उनके प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आर्योद्देश्यरत्नमाला, भ्रान्तिनिवारण आदि हैं। वेदभाष्य के रुप मे ऋग्वेद (आंशिक) एवं यजुर्वेद पर सम्पूर्ण संस्कृत-हिन्दी भाष्य कर उन्होंने प्रभूत ज्ञानराशि विश्व के लोगों को प्रदान की है। उनके जीवन चरित भी अत्यन्त शिक्षाप्रद है। उनके उपदेशों का संग्रह उपदेश-मंजरी, शास्त्रार्थ एवं प्रवचनों के संग्रह, उनकी आत्माकथा, उनका पत्रव्यवहार आदि भी मनुष्य जाति की अनमोल निधियां व ज्ञान के भण्डार हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में देश में विदेशी अंग्रेजी सरकार के होते हुए तथा सन् १८५७ में देशभक्तों का निर्दयता से संहार करने पर भी अपनी आवाज को दबाया नहीं। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने देश की आजादी का खुलकर स्पष्ट शब्दों में बिगुल बजाया है। कुछ विद्वान् सत्यार्थप्रकाश के इन्हीं शब्दों को उनकी मृत्यु का कारण मानते हैं। सम्पूर्ण वेद ही देश को आजाद कराने की प्रेरणा करता है। वेद का अध्ययन करने वाला मनुष्य न केवल अपने देश को स्वतन्त्र देखना चाहता है अपितु वह चाहता है कि सर्वोत्तम गुणों व व्यवहारों से युक्त वेद की शिक्षाओं के अनुसार शासन ही सम्पूर्ण विश्व में स्थापित हो। वेद में परमात्मा ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् कह कर ऐसा ही वैदिक राष्ट्र व वैदिक विश्व बनाने की प्रेरणा भी की

है। एक अनुमान के अनुसार ऋषि दयानन्द के समय व आजादी तक के सभी ऋषिभक्त, वेदानुयायी एवं आर्यसमाजी लगभग शत-प्रतिशत देश को आजाद कराने की भावनाओं से युक्त थे और उन्होंने किसी न किसी रुप में देश की आजादी में अपना योगदान दिया था। क्रांतिकारियं के आद्य आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा भी ऋषि दयानन्द के साक्षात् शिष्य रहे। ऋषि की प्रेरणा से उन्होंने इंग्लैण्ड जाकर संस्कृत का अध्यापन किया था।

ऋषि दयानन्द के समय में देश अज्ञान व अशिक्षा से भरा हुआ था। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा व ज्ञान के महत्व का प्रकाश व प्रचार किया। उन्होंने संस्कृत अध्ययन के लिये कुछ पाठशालायें भी खोली थी। उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में वर्णित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को साकार रुप दिया एवं एक विश्व विख्यात गुरुकुल को हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में स्थापित किया था, जिसने महाभारत युद्ध के कुछ बाद अवरुद्ध वैदिक विद्वानो की परम्परा को पुनः प्रचलित किया। इस गुरुकुल से समय-समय पर अनेक वेदों के शीर्ष विद्वान् प्राप्त हुए। हिन्दी पत्रकारिता एवं हिन्दी व संस्कृत के अध्यापन में भी गुरुकुल से योग्य स्नातक व आचार्य प्राप्त हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी और स्वामी दर्शनानन्द जी ने देश के अनेक भागों में अनेक गुरुकुल खोले। यह गुरुकुलीय आन्दोलन समय के साथ लोकप्रिय हुआ और देश में बालक बालिकाओं के पृथक-पृथक अनेक गुरुकुल स्थापित हुए जो आज भी सैकड़ों की संख्या में देश भर में चल रहे हैं। हमारे पौराणिक विद्वान स्त्रियों को वेदों के अध्ययन, मन्त्रपाठ व वेदमन्त्र सुनने तक का अधिकार नहीं देते थे। ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों व शूद्रों को वेदाधिकार दिया। उनकी ही कृपा से आर्यसमाज के गुरुकुलों से अनेक वेद विदुषी देवियां यथा आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी, डॉ. सूर्यादेवी, डॉ. नन्दिता शास्त्री, डॉ. सुमेधा, डॉ. सुकमा, डॉ. प्रियम्वदा, डॉ. अन्नपूर्णा, डा. धारणा आदि प्राप्त हुई जिन्होंने स्वयं गुरुकुल संचालित कर सहस्रों कन्याओं को वैदिक धर्म की प्रचारक विदुषी वैदिक नारी बनाया। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद संयुक्त पंजाब की आर्यसमाजों ने उनकी स्मृति में डी.ए.वी. स्कूल एवं कालेजों का देश-विदेश में संचालन किया। इन स्कूल कालेजों से अब तक करोड़ों युवक-युवतियों ने शिक्षा प्राप्त की व अब भी कर रहे हैं जिससे देश से अज्ञान का अन्धकार दूर होकर आध्यात्मिक एवं भौतिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर सनातन धर्म सभाओं आदि अनेक संस्थाओं ने विद्यालयों का संचालन किया। वर्तमान में शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है। अब शिक्षा का पहला जैसा स्तर भी नहीं रहा। राजनेताओं को सत्ता चाहिए। शिक्षा के स्तर को लेकर उनको कभी गंभीर नहीं देखा गया। आज अनेक शिक्षण संस्थायें ऐसी हैं जहां देश का अरबो रुपया व्यय होता है और यहां देशभक्त लोग नहीं अपितु देश विरोधी युवक युवतियां तैयार होते हैं। ऋषि दयानन्द के समय से ही आर्यसमाज ने शिक्षा जगत में देश व धर्म को महत्व देने वाली तथा चरित्रवान युवक व युवतियों का निर्माण करने वाली शिक्षा का प्रचार किया है। इन सबका प्रमुख श्रेय आर्यसमाज व उसके संस्थापक ऋषि दयानन्द को जाता है।

ऋषि दयानन्द के समय में वेद विलुप्त हो चुके हैं। वेद के मन्त्रों का सत्य व यथार्थ अर्थ करने की योग्यता विद्वानों में नहीं थी। काशी विद्या की नगरी थी। यहां कहीं वेदों का अध्ययन-अध्यापन होता था, इसकी जानकारी नहीं मिलती। वेद ही लुप्त थे तो वेदों का अध्ययन कैसे व क्यों कर होता? काशी के अतिरिक्त देश के अन्य क्षेत्रों में तो वेदाध्ययन होना सम्भव ही प्रतीत नहीं होता। ऋषि दयानन्द ने विलुप्त वेदों का उद्धार किया। उन्होंने वेदों के सत्य, यथार्थ एवं व्यवहारिक अर्थों को प्रकाशित एवं प्रचारित किया। इंग्लैण्ड निवासी जर्मन विद्वान् प्रो. मैक्समूलर तक ने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की प्रशंसा की है। ऋषि के इस ग्रन्थ को पढ़कर मैक्समूलर के विचारों में भी परिवर्तन हुआ। मैक्समूलर यहां तक प्रभावित हुए कि उन्होंने

कहा कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से होता है और उसकी समाप्ति ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर होता है। मैक्समूलर महोदय ऋषि से प्रभावित थे। वह ऋषि दयानन्द का जीवन चरित लिखना चाहिते थे परन्तु उनके प्रस्ताव का ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा ने उत्तर नहीं दिया था। **ऋषि दयानन्द की कृपा से आज वेदों की पूर्ण प्रामाणिक वेद संहितायें एवं वेदों पर ऋषि दयानन्द एवं उनके अनुयायी अनेक विद्वानों के आंशिक एवं सम्पूर्ण भाष्य उपलब्ध हैं।** ऋषि दयानन्द द्वारा वेदों के उद्धार के महत्व का अनुमान तो वेदों की परम्परा से जुड़े विद्वान ही लगा सकते हैं। ऋषि दयानन्द द्वारा वेदों के वेदप्रचार से भारत के नगरों व ग्रामों में रहने वाले हिन्दुओं सहित पर्वतों व वनों आदि सुदूर स्थानों पर रहने वाले आदिवासी हिन्दुओं का ईसाई व इस्लाम मत में छल, बल व लोभ से किया जाने वाला परावर्तन एवं धर्मान्तरण भी कम हुआ। आज यह फिर तेजी से सिर उठा रहा है और भीतर ही भीतर अनेक प्रकार से इसे अंजाम दिया जा रहा है। हिन्दू समाज के शिक्षित लोग इसकी उपेक्षा कर रहे हैं। देश का सौभाग्य है कि आज केन्द्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है- जिनके समय में हिन्दुओं व आर्यों की उपेक्षा होनी कम हुई है। आर्यसमाज व हिन्दू समाज पर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट दीखता है कि यह आज भी भावी संकटों व समस्याओं से बेखबर व उदासीन है। आर्यसमाज का संगठन क्षीण प्रायः है। यदि आर्यसमाज संगठित नहीं हुआ, हिन्दू समाज और आर्यसमाज में देश की समस्याओं मुख्यतः धर्मान्तरण व जनसंख्या वृद्धि रोकने पर परस्पर सार्थक सहयोग नहीं हुआ तो यह आर्य हिन्दू जाति के लिए अत्यन्त दुःखद अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर सकता है। किसी सेकूलर दल की हिन्दू जाति के पराभव को रोकने में किंचित भी रुचि नहीं है। **ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद उत्पन्न हुए महापुरुषों में अद्वितीय व सर्वतोमहान महापुरुष थे। उनके कारण हिन्दू जाति की रक्षा हुई है। उनके बताये मार्ग पर चलकर ही हिन्दू आर्य जाति भविष्य में भी रक्षित रह सकती है। प्रश्न है कि क्या वह ऋषि दयानन्द के संगठन एवं शुद्धि के विचारों को अपनाती है अथवा नहीं ?**

पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

"लक्ष्य"

हर इंसान, जीवन में सफल होना चाहता है,
और क्यों न चाहे....
लक्ष्य पाकर, उसे वह सब काफी कुछ मिला जाता है
जिसके लिए, वह जी रहा है।
यानी जीवन में, स्थिरता, सुख-सुविधा, स्वाभिमान
सार्थकता, सम्मान और स्वामित्व।
लेकिन दोस्त ! इसके आगे भी जिन्दगी में,
ऐसा कुछ है, जिसे पाए बिना इंसान
सफल होकर असफल है।
वह है "ईश्वर-प्राप्ति"।
जिन्दगी जीने से लेकर...
जिन्दगी संवारने तक का सफर,
ईश्वर तक जाकर ही खत्म होता है।

भेदभाव ठीक नहीं

देश, अच्छा है मेरा, भेदभाव ठीक नहीं
घर तो मजबूत है, पर रख-रखाव ठीक नहीं
उन्नति हो तो रही है, ये जानते हैं सभी
मगर ये जाति धर्म का, तनाव ठीक नहीं
न्याय, जज और अदालत, है तुम्हारे लेकिन
देश के दुश्मनों का बचाव, ठीक नहीं
हम उतरना तो चाहते हैं, समन्दर में मगर
है एकता की हमारी जो नाव, ठीक नहीं
तुम्हारे झांसे में, बरसों से आ रही जनता
ये तुम जो खेल रहे हो, वो दांव ठीक नहीं
देश के वास्ते गर्दन, कटा भी सकते हैं
परन्तु, तुम जो दे रहे हो घाव, ठीक नहीं।

- नरेन्द्र राय

मेरे मार्गदर्शक गुरु-स्वामी दिव्यानन्द

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का छत्तीसगढ़ प्रान्त में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में स्वर्णिम एवं अविस्मरणीय योगदान रहा है। निस्पृह, कर्मठ एवं सरस वक्तृता से ओतप्रोत चुम्बकीय व्यक्तित्व सम्पन्न पूज्य स्वामी जी के सम्पर्क में आया प्रत्येक व्यक्ति बरबस आकृष्ट हुए बिना नहीं रहा। आज भी छत्तीसगढ़ के अन्दर हजारों आर्यजन हैं जो उनके प्रेरक व्यक्तित्व से अभिभूत हो वैदिक धर्म एवं दयानन्द के मिशन को गति देने में तत्पर है।

ऐसे प्रेरणा स्रोत व्यक्तित्व के धनी स्वर्णिम स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का जन्म झांसी क्षेत्र के उरई जिले के आटा नामक ग्राम में ब्राह्मण परिवार में १५ अगस्त सन् १९०६ को हुआ था। आपके दादा जी स्वामी दयानन्द सरस्वती के दीक्षित शिष्य थे। आपके पिता फौज में कार्यरत थे। दादाजी की प्रेरणा से १२ वर्ष की आयु में संन्यास लिया और आजीवन अपने आपको स्वामी दयानन्द सरस्वती के चरणों में समर्पित कर दिए। वेदोद्धारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के एक-एक कथन को प्रामाणिक तथा सैद्धान्तिक मानने वाले स्वामी दिव्यानन्द जी ने देश-विदेश के २२-२३ देशों में वैदिक संस्कृति एवं दयानन्द का सन्देश (एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य) दिया। वे विश्वशान्ति एवं सन्तुलन के लिए परिग्रह को घातक मानते थे। "वेदवाणी वाले स्वामी जी" के नाम से मारिशस वासियों के अतिप्रिय थे।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्यसमाज के योगदान में स्वामी जी की प्रमुख भूमिका रही। महात्मा गांधी की प्रेरणा से नमक सत्याग्रह में भाग लिए तबसे मृत्युपर्यन्त नमक नहीं खाए। स्वतंत्रता के बाद गाय तथा हिन्दी रक्षा के लिए तिहाड़, हिसार, फिरोजपुर जेल गए। सन् १९३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में निजाम के जेल में कठोर दण्ड भोगे। अपने जीवन में १५वर्ष अंग्रेजों की जेल में सजा काटी। लाल बहादुर शास्त्री, रफी अहमद किदवई, आचार्य श्रीराम शर्मा जेल के साथी रहे। सरदार भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद उनके अनन्य सहयोगी रहे। डा. राजेन्द्र प्रसाद से मिलकर अराष्ट्रीय तत्व निरोध का मार्ग प्रशस्त किया। अंग्रेजों के शासनकाल में उड़ीसा प्रान्त में सबसे प्रथम हिन्दी पाठशाला चलाई। सरगुजा क्षेत्र के भटके हुए भाइयों को वापस आर्य (हिन्दू) धर्म में लाने शुद्धि संस्कार का बिगुल बजाया।

स्वामी जी का छत्तीसगढ़ क्षेत्र में पदार्पण, भिलाई के गायत्री यज्ञ के अवसर पर सन् १९६० के लगभग हुआ। स्वामी जी आचार्य श्रीराम शर्मा के पुरोहित रहे। इसी संदर्भ में वे माता भगवती देवी का यज्ञोपवित संस्कार किए। आचार्य जी के पुत्री शैल का प्रणव पंड्या के साथ परिणय संस्कार स्वामी जी द्वारा सुसम्पन्न हुआ। लगभग

श्री दीनानाथ वर्मा

मैं स्वामी जी के सम्पर्क में वर्ष १९७२ में आया। स्वामी जी से प्रथम भेंट तिल्दा के श्री रुहाराम वर्मा गुरुजी के निवास में हुआ। स्वामी जी ने मेरे गृह में सन् १९७३ में दो बार ग्राम गेतरा में यज्ञ किए और सार्वजनिक स्थान पर प्रभावशाली प्रवचन दिए। वेद और दयानन्द के दीवाने स्वामी अपने नाम के अनुरूप दिव्य गुणों से ओतप्रोत थे। भिलाई सेक्टर-६ सिविक सेन्टर में श्री बंसलजी के कपड़ा दुकान में दो-तीन बार वर्ष १९७४ में भेंट हुई। १९७५ में गरियाबन्द में भव्य ५ दिवसीय यज्ञ समारोह आयोजित किया गया, उस समय मैं पोस्ट मास्टर और भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा डाक बाबू गरियाबन्द थे। हम दोनों ने उसी समय दीक्षा लेकर शिष्य बने। ●

मंत्री, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

३५ वर्ष तक छत्तीसगढ़ के गांव-गांव तथा जन-जन तक वैदिक ज्ञान को पहुँचाए। छत्तीसगढ़ के प्रायः प्रत्येक ग्रामों कस्बों और नगरों में स्वामी जी के असंख्य दिक्षीत शिष्य हैं। स्वामी जी खरोरा आए तब प्रथम शिष्य के रुप में हिरालाल गुप्ता जी और धन्नूलाल अग्रवाल जी, द्वितीय शिष्य के रुप में बने। खरोरा, रायखेड़ा, बरतोरी, जर्वे, पथरी, गिर्रा, बलौदाबाजार, लवन आदि ग्रांम्यांचलों में स्वामी जी द्वारा सघन वेदप्रचार किया गया। खरोरा में डा. देवसिंह वर्मा प्रमुख शिष्य रहे। गरियाबन्द में दीनानाथ वर्मा पोस्ट मास्टर और श्री भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा डाक सहायक तथा तब वर्ष १९७५ में भव्य ५ दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन स्वमी जी के माध्यम से रखा गया। जिसका क्षेत्र में अच्छा प्रभाव पड़ा। गरियाबन्द के तीजू सेठ, मदनलाल अग्रवाल, बृजलाल ठक्कर, परदेशीराम सोनवानी आदि स्वामी जी के सम्पर्क में आए। उसी अवसर पर मैं स्वामी जी से विधिवत दीक्षा लेकर शिष्य बना।

महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्यसभा पोर्टलुईस (मारीशस) में लाखों रुपये की स्थिर निधियाँ स्थापित की। स्वामी दिव्यानन्दजी की वक्तृता शैली जादुई थी। जो भी राहगीर अचानक श्रवण किए तो रुककर अवश्य स्वामी जी के दर्शन कर कृतकृत्य होते थे गरियाबन्द के भव्य कार्यक्रम में श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव तत्कालीन मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र व विदर्भ भाग लिए। स्वामी जी का रायपुर प्रवास कई बार होता था। रायपुर में स्वामीजी भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा, संतोषी नगर रायपुर के गृह में अक्सर रुकते थे। पं. रामदेव वैदिक प्रचार कार्य में भजनोपदेशक के रूप में स्वामीजी को सहयोग करते थे। स्वामी जी तुरतुरिया मेला में वेद प्रचार के लिए जाते समय मोटर सायकल से गिर पड़े परिणामस्वरुप पैर के अंगूठे में चोट लग गई। मधुमेह से पीड़ित होने के कारण घाव बढ़ता गया। हृदयरोग से अंक्रांत हो गए। डा. देवसिंह वर्मा के सेवाश्रम दवाखाना खरोरा जिला रायपुर में आश्रय लेकर उपचार कार्य शिष्यों द्वारा किया गया। डा. वर्मा अति भक्तिपूर्वक स्वामी जी की सेवा किए। उसी समय चिकित्सा क्षेत्र रायपुर पहुंचे। तब आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर के पुरोहित के रुप में श्री कमलनारायण जी कार्यरत थे उन्होने स्वामी जी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि स्वामी जी यदि आप चाहें तो आपका सम्पूर्ण चिकित्सा व्यय भार आर्यसमाज बैजनाथ पारा द्वारा वहन किया जा सकता है। तब स्वामी जी ने कहा कि मेरे चिकित्सा आदि पर आर्यसमाज का एक रुपया भी व्यय न किया जाय। मेरे शिष्यगण मेरी चिकित्सा भक्ति श्रद्धा व लगन से कर रहे हैं। ऐसे निष्पृह संन्यासी का त्याग धन्य है। स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ८२ वर्ष की आयु में विक्रम संवत २०४५ सोमवती (मौनी) अमावस्या (माघ माह) के ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ४.१५ बजे ओ३म् ओ३म् कहते हुए वेद मंदिर सेवाश्रम दवाखाना खरोरा जिला रायपुर (छ.ग.) में हृदयाघात से मृत्यु की गोद में समा गए। अपने नाम के अनुरूप स्वामीजी दिव्यता से ओतप्रोत थे। जगह-जगह स्वामी जी के शिष्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिए। उन्हीं के शिष्यों द्वारा आर्य समाज संचालित की गई जो आज भव्य रुप में स्थापित है आशीर्वाद ग्रहण कर सोने का छल्ला स्वामी जी को भेंट कर दिल्ली जाकर प्रधान मंत्री पद का शपथ लिए। ऐसे प्रेरणादायक स्वामी जी थे। ●

आइये प्रतिज्ञा लें.

१. हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सृष्टिकर्ता परमात्मा उसकी सृष्टि और ईश्वरीय ज्ञान में हमारी आस्था रहेगी।

२. जीवन के उदात्त मानव मूल्यों की रक्षा करते हुए हम बराबर स्नेह और सौमनस्य का प्रसार करेंगे और किसी ऐसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं देंगे जिसमें आपस में ईर्ष्या की भावना बढ़े।

३. जीवन में अण्डे, मांस, मछली, शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करेंगे।

४. बिना जाति भेद, वर्ण भेद के हम दीन, हीन, पीड़ितों, असहायों, रोगियों और अशक्तों की यथाशक्ति निष्काम भाव और निस्वार्थता से सेवा करेंगे।

बलिदान दिवस माँ भारती के साहसी सपूत - वीर सावरकर

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। उन्हें प्रायः वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचारधारा (हिन्दुत्व) को विकसित करने का बहुत श्रेय सावरकर को जाता है। वे न केवल स्वाधीनता संग्राम के एक तेजस्वी सेनानी थे, अपितु महान् क्रान्तिकारी, चिन्तक, सिद्धान्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता भी थे। वे एक ऐसे इतिहासकार भी हैं जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र की विजय के इतिहास को प्रमाणिक ढंग से लिपिबद्ध किया है। उन्होंने १८५७ को को प्रथम स्वातंत्र्य समर का सनसनीखेज व खोजपूर्ण इतिहास लिखकर ब्रिटिश शासन को हिला कर रख दिया था। *(सम्पादक)*

विनायक सावरकर का जन्म महाराष्ट्र (मुम्बई) प्रान्त में नासिक के निकट भागुर गाँव में हुआ था। उनकी माता जी का नाम राधाबाई तथा पिताजी का नाम दामोदर पन्त सावरकर था। इनके दो भाई गणेश (बाबाराव) व नारायण दामोदर सावरकर तथा एक बहन नैनाबाई थीं। जब वे केवल नौ वर्ष के थे तभी हैजे की महामारी में उनकी माता जी का देहान्त हो गया। इसके सात वर्ष बाद सन् १८९९ में प्लेग की महामारी में उनके पिताजी भी स्वर्ग सिधारे।

सन् १९०४ में उन्होने अभिनव भारत नामक एक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। १९०५ में बंगाल के विभाजन के बाद उन्होने पुणे में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। फर्ग्युसन कालेज पुणे में भी वे राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत ओजस्वी भाषण देते थे। इंडियन सोशियोलजिस्ट और तलवार नामक पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुये, जो बाद में कलकत्ता के युगान्तर पत्र में भी छपे। सावरकर रुसी क्रान्तिकारियों से ज्यादा प्रभावित थे। सावरकर सन् १८५७ के सिपाही विद्रोह को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ स्वतन्त्रता की पहली लड़ाई बताया।

लन्दन में रहते हुए उनकी मुलाकात लाला हरदयाल से हुई जो उन दिनों इंडिया हाऊस की देखरेख करते थे। यहीं रहकर मदनलाल ढींगरा ने कर्नल वायली तथा सरदार उधमसिंह ने माईकलओ डायर को गोली का शिकार बनाया था। इतना ही क्यों लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, लाल हरदयाल एमए जो पक्के आर्यसमाजी थे, इनके सम्पर्क में भी सावरकर जी बहुत अधिक समय तक रहे। भाई परमानन्द और वीर सावरकर तो अण्डमान की काल कोठरी में कई वर्षों तक साथ रहे इसलिये वीर सावरकर के ऊपर आर्यसमाज का प्रभाव पड़ना तो स्वाभाविक ही था। सन् २४ दिसंबर १९१० को उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गयी, इसके बाद ३१ जनवरी १९११ को इन्हें दोबारा आजीवन कारावास दिया गया। इस प्रकार सावरकर को ब्रिटिश सरकार ने क्रान्ति कार्यों के लिए दो-दो आजन्म कारावास की सजा दी, जो विश्व के इतिहास की पहली एवं अनोखी सजा थी।

सावरकर के अनुसार - **मातृभूमि ! तेरे चरणों में पहले ही मैं अपना मन अर्पित कर चुका हूँ। देश-सेवा ही ईश्वर सेवा है, यह मानकर मैंने तेरी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की।**

नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के लिए नासिक षड़यंत्र काण्ड के अंतर्गत इन्हें ७ अप्रेल १९११ को कालापानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। उनके अनुसार यहां स्वतंत्रता सेनानियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। कैदियों को यहां नारियल छीलकर उसमें से तेल निकालना पड़ता था। साथ ही इन्हें यहां कोल्हू में बैल की तरह जुत कर सरसों व नारियल आदि का तेल

निकालना होता था। इसके अलावा उन्हें जे के साथ लगे व बाहर के जंगलों को साफ कर दलदली भूमि व पहाड़ी को समतल भी करना होता था। रुकने पर उनको कड़ा सजा व बेंत व कोड़ों से पिटाई भी की जाती थी। इतने पर भी उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया जाता था। सावरकर ४ जुलाई १९११ से २१ मई १९२१ तक पोर्ट ब्लेयर की जेल में रहे।

१५ अगस्त १९४७ को उन्होने सावरकर सदान्तों में भारतीय तिरंगा एवं भगवा, दो-दो ध्वजारोहण किये। इस अवसर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये उन्होने पत्रकारों से कहा कि मुझे स्वराज्य प्राप्ति की खुशी है, परन्तु वह खण्डित है, इसका दुःख है। उन्होने यह भी कहा कि राज्य की सीमायें नदी तथा पहाड़ों या सन्धि-पत्रों से निर्धारित नहीं होती, वे देश के नवयुजकों के शौर्य, धैर्य, त्याग एवं पराक्रम से निर्धारित होती है। सितम्बर १९६६ में उन्हें तेज ज्वर ने आ घेरा, जिसके बाद इनका स्वास्थ्य गिरने लगा। १ फरवरी १९६६ को उन्होंने मृत्युपर्यन्त उपवास करने का निर्णय लिया। २६ फरवरी १९६६ को बम्बई में भारतीय समयानुसार प्रातः १० बजे उन्होंने पार्थिव शरीर छोड़कर परमधाम को प्रस्थान किया।

वीर सावरकर के ऊपर महर्षि दयानन्द आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश की कितनी गहरी छाप पड़ी हुई थी। छाप क्यों न पड़ें? इनके गुरु श्री श्यामकृष्ण वर्मा जो महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे और वर्मा जी लन्दन स्वामी जी की प्रेरणा से ही गये थे और वहां जाकर भारतीय क्रान्तिकारियों को आश्रय देने के लिये उन्होंने सन् १९०६ में इंडिया फ्रान्स चले जाने पर वीर सावरकर ने ही इस इंडिया हाऊस को संभाला।

सावरकर एक प्रख्यात समाज सुधारक थे। उनका दृढ़ विश्वास था, कि सामाजिक एवं सार्वजनिक सुधार बराबरी का महत्व रखते हैं व एक दूसरे के पूरक हैं। उनके समय मं समाज में बहुत सी कुरीतियों और बेड़ियों के बंधनों में जकड़ा हुआ था। इस कारण हिन्दू समाज बहुत ही दुर्बल हो गया था। अपने भाषणों, लेखों व कृत्यों से इन्होने समाज सुधार के निरंतर प्रयास किए। हालांकि यह भी सत्य है कि सावरकर ने सामाजिक कार्यों में तब ध्यान लगाया, जब उन्हें राजनीतिक कलापों से निषेध कर दिया गया था। किन्तु उनका समाज सुधार जीवन पर्यन्त चला। उनके सामाजिक उत्थान कार्यक्रम ना केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि राष्ट्र को समर्पित होते थे। सन् १९२४ से १९३७ तक का समय इनके जीवन का समाज सुधार को समर्पित काल रहा।

सावरकर के अनुसार हिन्दू समाज सात बेड़ियों में जकड़ा हुआ था - **१. स्पर्शबंदी** - निम्न जातियों का स्पर्श तक निषेध, अस्पृश्यता। **२. रोटीबंदी** - निम्न जातियों के साथ खानपान निषेध। **३. बेटीबंदी** - खास जातियों के संग विवाह संबंध निषेध। **४. व्यवसायबंदी** - कुछ निश्चित व्यवसाय निषेध। **५. सिंधुबंदी** - सागरपार यात्रा, व्यवसाय निषेध। **६. वेदोक्तबंदी** - वेद के कर्मकांडों का एक वर्ग को निषेध। **७. शुद्धिबंदी** - किसी को वापस हिन्दूकरण पर निषेध।

सावरकर ने शुद्धि यज्ञ एवं अछूतोद्धार का बिगुल बजाया। ईसाईयों एवं मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराये जाने पर इनका हिन्दू हृदय संतप्त हो उठा था। प्रत्युत्तर में उन्होने सैकड़ों ईसाईयों एवं मुसलमानों को शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर लिया। अंडमान की सेल्यूलर जेल में रहते हुए उन्होंने बंदियों को शिक्षित करने का काम तो किया ही, साथ ही साथ वहां हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु काफी प्रयास किया। सावरकर जी हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-भेद एवं छुआछूत के घोर विरोधी थे। बम्बई का पतितपावन मंदिर इसका जीवंत उदाहरण है, जो हिन्दू धर्म के प्रत्येक जाति को लोगों के लिए समान रुप से खुला है। पिछले सौ वर्षों में इन बंधनों से किसी हद तक मुक्ति सावरकर के ही अथक प्रयासों का परिणाम है।

पं. ऋषिराज आर्य, रायपुर

याद रखना

धन सभ्यता दे सकता है संस्कृति नहीं।
धन सुख दे सकता है आनन्द नहीं।
धन शस्त्र दे सकता है साहस नहीं।

जीवन में कुछ खोना भी पड़ता है

प्रौढ़ता की उम्र में व्यक्ति के जीवन में काफी गड्ड-मड्ड इकट्ठा हो जाती है। जिंदगी की वह तस्वीर स्पष्ट हो जाती है, जिसे वह गढ़ना चाहता है तो वह इस गड्ड-मड्ड को पहचानने लगता है तथा उसे अपनी जिन्दगी से निकालने का प्रयास करता है। आप उन परिचयों का त्याग कर सकते हैं जो आपका समय बर्बाद करते हैं तथा प्रयासों में बाधा पहुंचाते हैं। और आपको वश में करने की कोशिश करते हैं। नींद में विश्राम के लिए आठ घंटे का समय देना अच्छी बात है। आठ घंटे आपके व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यों के लिए पर्याप्त समय है। परन्तु जैसे-जैसे आपकी जीवन पद्धति मजबूत होती जाती है, आपके काम के समय में बढ़ोतरी होती है। बाकी आठ घंटे मूल्यवान हैं। आपको उन्हें विभिन्न कार्यों में बांट देना चाहिए। उनमें से प्रत्येक उस काम के लिए आबंटित होगा जिसे आप करना चाहते हैं। उसके लिए नहीं, जिसे आपको करना ही है। आप क्या करना चाहते हैं? ठहरों और सोचें।

इस प्रकार की तालिका : खेलना, सामाजिक जीवन, लेखन, संगीत, जीविका क्षेत्र के अलग ज्ञान का विस्तार, बागवानी, घर की कार्यशाला में कुछ उपकरण बनाना, नौकायान, सिर्फ बैठे रहना और बादलों या तारों को देखना।

संकलित : जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें.

सुन ले गोरे, सुन ले गोरे, देश आजाद करायेंगे
बेंत क्या चाहे लाठी चले, आँसू नहीं बहायेंगे
बाधाएँ कब बाँध सकी है, आगे बढ़ने वालों को
विपदायें कब रोक सकी हैं, आगे बढ़ने वालों को
नहीं देश से प्यार जिन्हें वे, मानस नहीं पाहन है।
हाड मांस के दो पग वाले, प्राणी के बस वाहन है॥

गो संरक्षण की दिशा में बढ़ाये कदम

रायगढ़। एक ओर जहां लोग गौकशी जैसा जघन्य अपराध कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर समाज सेवियों ने गौ रक्षा के संकल्प का बीड़ा उठाया है, गौ रक्षा के लिए समाजसेवियों द्वारा किए जा रहे प्रयासों से गौ संरक्षण के वादे सार्थक साबित हो रहे हैं। गौशाला में गाय की सेवा करने के लिए समाज सेवियों की संख्या में दिनों-दिन वृद्धि हो रही है।

समाजसेवियों की पहल से सड़कों में घूम रहे अवारा पशुओं को बड़ी राहत मिल रही है। बता दें कि इन दिनों जिले में अन्ना प्रथा एक समस्या बन गई है। जिस गाय की पूजा से पुण्य मिलने की बात कही जा रही है, उसी पूजनीय गाय को लोगों ने दर-दर की ठोकरें खाने के लिए खुला छोड़ दिया है। ऐसे में सड़कों पर अवारा घूम रहे पशुओं को गैर प्रदेशों से आ रहे लोगों ने कमाई का जरिया बना लिया है। समूचे जनपद में अवारा घूम रहे पशु दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर हैं। गौशाला संरक्षण समिति के पदाधिकारियों ने गौ संरक्षण की दिशा में पहल तेज की है। इसके लिए गौशाला में समाजसेवियो की संख्या में दिनों-दिन बढ़ोतरी हो रही है। समाजसेवी भारतसिंह के नेतृत्व में समाज सेवियों की संख्या बढ़ रही है। समाजसेवी हर रोज गौशाला में पहुंचकर गाय की सेवा कर रहे हैं। समिति के पदाधिकारियों का कहना है कि गाय को लोगों ने खुला छोड़ दिया है। जिससे लोग इन्हें गौकशी के गोरखधन्धे में जुड़े लोगों के हवाले कर रहे हैं। साठ वर्ष की उम्र के बाद भी केदार कक्का ने गौ सेवा में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं आई है। गौशाला में बीमार गायों के इलाज के साथ-साथ समाजसेवी गौवंशों को समय पर चारा व पानी देना नहीं भूल रहे। इन प्रयासों से गौ संरक्षण के दावे सार्थक साबित हो रहे हैं।

आचार्य बलदेव राही, पोतरा (रायगढ़)

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से पीलिया (जान्डिस) का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

आज का युग ने विज्ञान और विकास के अनेकों द्वार खोल दिये हैं। प्रत्येक क्षेत्र में नयी नयी जानकारियों का उदय हुआ है। चिकित्सा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। रोगी के निवारण के लिये अनेकों चिकित्सा पद्धतियों की खोज हो चुकी है, परन्तु होमियोपैथी की अपनी अलग एक पहचान है।

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना-इसी को रामबाण कहते हैं। चुनी हुई औषधि से रामबाण के समान जटिल से जटिल रोग भस्म हो जाते हैं।

पीलिया - पीलिया रोग को पाण्डू या कामला और अंग्रेजीमें जान्डिस कहा जाता है। विद्वान चिकित्सकों का मानना है कि यकृत जिसे अंग्रेजी में लीवर कहते हैं। यकृत लीवर के भीतर ही पिताशय का स्थान है उसी पिताशय से निकला हुआ पित्त किसी शारीरिक गड़बड़ी या कमी के कारण निर्धारित गति से निकल कर रक्त नहीं मिले तो, आँख, मुंह, नाखून और शरीर में पीलापन आ जाता है, इसी शारीरिक स्थिति को पीलिया कहते हैं। इस रोग में रोगी का पूरा शरीर फीका पड़ जाता है, अर्थात् उसकी त्वचा का रंग आँखे आदि सभी पीले हो जाते हैं, साथ ही हल्का ज्वर, सुस्ती, भूख ना लगना, मुंह का कड़वापन, कमजोरी, अनिद्रा आदि लक्षण भी रहते हैं। यह रोग मुख्यतः यकृत (लीवर) की खराबी के कारण होता है, इसके अलावा पौष्टिक तत्वों की कमी, खुली हुई धून न मिल पाना, पुराना मलेरिया आदि कारण हो जाता है।

पित्त पथरी, पित्त के राह में किसी प्रकार का बाहरी या आंतरिक दबाव, पित्त नली में किसी का प्रवेश, पित्त नली का सिकुड़ जाना, डिस्पेप्सिया अर्थात् मन्दाग्नि या अपच या बदहजमी पित्त नली में किसी कारण से सूजन से यह रोग होता है।

पीलिया के लक्षण :- आँख, मुंह, नाखून और पेशाब में पीलापन, भूख कम और मिचलिया, अबकाईयाँ आती रहती है, कुछ मामलों में उल्टी भी हो जाती है। कभी पतले दस्त भी आते हैं कभी पैर भी फूल जाते हैं, और मल में बदबू आती है, नब्ज धीमी गति से चलना, एक मिनट में ३० से ४० बार तक धीमी हो जाती है, रोगी को नींद नहीं आती है, और कमजोरी आ जाती है, रोग पुराना हो जाने पर शरीर में भयानक रुप से खुजली हो जाती है।

होमियोपैथी उपचार :- पीलिया से ग्रस्त कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गये हैं तथा कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

प्रमुख औषधीय :- ब्रायोनिया, चाइना, फेरमफास, चेलिडोनियम, कार्बोवेज, नेट्रमसल्फ आदि औषधियां लक्षणों के आधार पर होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है।

परहेज :- पथ्य - जो रोगी के लिए सुपाच्य हो वही खाद्य पदार्थ उसे दिया जाना चाहिए। पीलिया के रोगी को पुराना जौ, गेहूँ, मूंग, मसूर की दाल, कच्चा केला, परबल, गन्ना आदि दिए जा सकते हैं।

अपथ्य :- मसाले वाली चीजे मांस मटन शराब अचार किसी भी प्रकार का अचार, मैदा, चीनी, चाय, काफी आदि पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध,
रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध में गणतंत्र दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ

रायपुर । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक २६ जनवरी २०२० को ७१वाँ गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसके मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान-छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों ध्वजात्तोलन किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री पं. काशीनाथ चतुर्वेदी, लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, केवलकृष्ण ब्रिज एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण मंचासीन रहे। विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह, उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा, श्रीमती निर्मला बाजपेयी (वरिष्ठ शिक्षिका), लोकनाथ आर्य, संजय शास्त्री, पं. ऋषिराज आर्य एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित रहे तथा विद्यालय के प्रतिभावान एवं वार्षिक खेलकूद के विजेता छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति-पत्र एवं शील्ड द्वारा सम्मानित किया गया। विद्यालय के बच्चों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई।

संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा.वि. रायपुर

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में वार्षिक खेलकूद एवं आनन्द मेला सम्पन्न

रायपुर । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध में **दिनांक ६ से ८ जनवरी २०२० तक** वार्षिक खेलकूद का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी द्वारा किया गया साथ ही विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह व उपप्राचार्य पुरुषोत्तम प्रसाद वर्मा, श्री संजय शास्त्री एवं खेल प्रभारी श्री दयाशंकर तिवारी जी उपस्थित रहे।

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में **दिनांक १८ जनवरी २०२० को आनन्द मेला** का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान- छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। साथ में सभा उपप्रधान-पं. काशीनाथ चतुर्वेदी, सभा मंत्री-श्री दीनानाथ वर्मा; आचार्य बलदेव राही-सभा उपमंत्री (कार्यालय) एवं मुख्य अधिष्ठाता, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी (कोषाध्यक्ष विद्यालय), विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह व उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम प्रसाद वर्मा और समस्त विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहे।

संवाददाता : प्राचार्य. म.द.आ.उ.मा.वि.

तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूरा में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

कूरा । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय प्रांगण कूंरा में ७१वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर प्रबंधक श्री सुधीर दुबे, प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

सभा कार्यालय में गणतंत्र दिवस सम्पन्न

दुर्ग । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द परिसर प्रांगण में ७१वाँ गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रातः ९.०० बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के प्रबंधक श्री के.के. गुप्ता सहित कार्यालय के कर्मचारीगण, विद्युत सुरक्षा विभाग के अधिकारी एवं समस्त कर्मचारीगण व अन्य कार्यकर्तागण मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

तुलाराम आर्य हाई स्कूल लवन में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

लवन। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन में ७१वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री चतुर्भुज कुमार सभा कोषाध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि आचार्य बलदेव राही सभा उपमंत्री (कार्यालय) एवं मुख्य अधिष्ठाता द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रबंधक श्री रामकुमार वर्मा, प्राचार्य श्रीमती मंदाकिनी ताम्रकार एवं शिक्षक-शिक्षिकाएँ तथा गणमान्य नागरिकगणों में सर्वश्री पारस ताम्रकार पार्षद, अजय ताम्रकार पार्षद, देवीलाल बार्वे, मनोज पाण्डेय, करुणाशंकर मिश्रा, कोसरिया जी, साधेलाल चन्द्राकर, फिरत साहू सहित, पालकगण एवं विद्यालय के छात्र-छात्राएँ भारी संख्या में उपस्थित रहे।

- संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.विद्या. लवन

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय राजेन्द्रनगर कटोरातालाब रायपुर में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

रायपुर। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय राजेन्द्रनगर कटोरातालाब, रायपुर प्रांगण में ७१वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में श्री तापेश्वर कुमार शर्मा, श्री दयालदास आहूजा, प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

गुरुकुल हरिपुर जुनानी का "दिशा पर्व" सम्पन्न

हरिपुर। ईश्वर की असीम अनुकम्पा से, गुरुकुल के अधिकारी व सहयोगी आचार्यों व कार्यकर्त्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से, दानदाताओं के सहयोग से, शताधिक पूज्य साधु-सन्तों व विद्वज्जनों के सान्निध्य में ओड़िशा के पच्चीस जिलों व छत्तीसगढ़, झारखण्ड, राजस्थान, दिल्ली, पं. बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार आदि राज्यों से पधारे सहस्राधिक श्रद्धालु महानुभावों की पावन उपस्थिति में गुरुकुल हरिपुर के संचालक पूज्य डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी की देखरेख में गुरुकुल हरिपुर जुनानी का त्रिदिवसीय दशम वार्षिक महोत्सव "दिशा पर्व" २८,२९,३० दिसम्बर २०१९ को अनेक उपलब्धियों के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

दिशा पर्व की सबसे बड़ी उपलब्धि अनेक आदर्श परिवार दैनिक अग्निहोत्र करने का संकल्प लिये एवं ब्रह्मचारियों के द्वारा चाय से हानि नाट्य गीतिका प्रस्तुति से प्रभावित होकर अनेक सज्जन चाय न पीने का व्रत लेकर यज्ञोपवीत धारण किये।

महोत्सव में पधारे सहस्राधिक श्रद्धालु महानुभावों की आशीर्वचन एवं मार्गदर्शन हेतु स्वामी स्वतन्त्रतानन्द सरस्वती, पूज्य डॉ. देवव्रत आचार्य जी, आचार्य शिवदत्त पाण्डेय (उ.प्र.), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी (म.प्र.), आचार्य राहुलदेव शास्त्री कोलकाता, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री आदि उपस्थित थे।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गु.ह.जु.

सुनिश्चित लक्ष्य पर एकाग्रचित होकर किया गया कार्य सफल बनाता है।

आर्यसमाज खुँटापानी (जशपुर) का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव सोल्लास सम्पन्न

खुंटापानी (जशपुर)। दिनांक २१ जनवरी २०२० को नवगठित आर्यसमाज खुँटापानी, जिला-जशपुर का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री कार्यालय एवं मुख्य अधिष्ठाता आचार्य बलेदव राही एवं पं. ऋषिराज आर्य सहित कई पदाधिकारीगण मुख्य रुप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य यजमान के रुप में श्री खुदानन्द यादव जी सपत्निक उपस्थित थे। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ, उपदेश व भजन का संगीतमय कार्यक्रम हुआ जिसमें ग्राम के सभी ग्रामवासी सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

संवाददाता : चन्द्रमणी आर्य

घोषणा - पत्र

(फार्म - 4 नियम - 8)

- प्रकाशन का स्थान - दुर्ग (छ.ग.)
- प्रकाशन की अवधि - मासिक
- भाषा - हिन्दी
- मुद्रक का नाम - आचार्यअंशदेव आर्य
  छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
  दुर्ग (छ.ग.)
  क्या भारत का नागरिक है - हाँ
- प्रकाशक का नाम - आचार्य अंशुदेव आर्य
  छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
  क्या भारत का नागरिक है - हाँ
- सम्पादक का नाम - आचार्य कर्मवीर
  क्या भारत का नागरिक है - हाँ
  पता - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)
- उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार है। - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान-छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. **SBIN0009075** कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. **BKDN0821078** है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

आर्यसमाज खूँटापानी (जशपुर) में सम्पन्न चतुर्थ वार्षिक महोत्सव की छलकियाँ

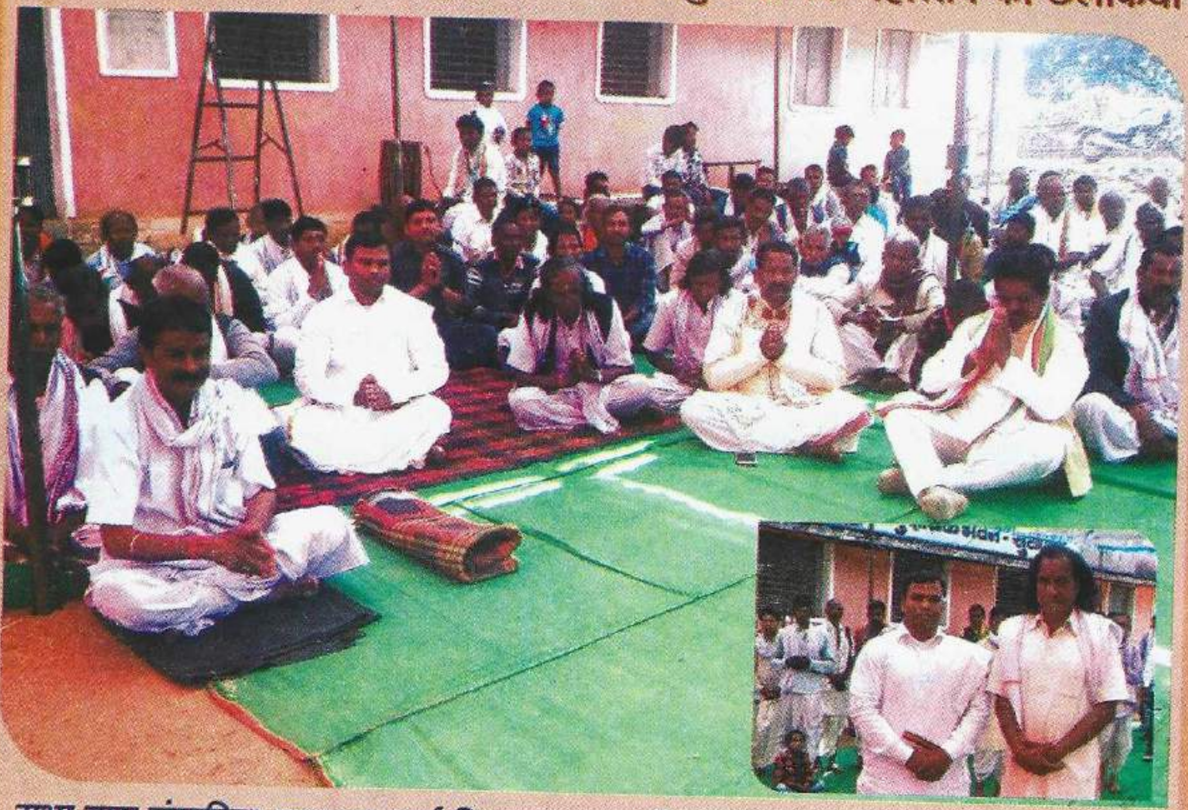

सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य विद्यालय लवन में सम्पन्न गणतन्त्र दिवस की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 फरवरी 2020 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय में छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : 'अमितृत', हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१